अंक-72
वर्ष 2016-17
द्वितीय छमाही

राजभाषा समर्पित अर्धवार्षिक गृह-पत्रिका

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय,भारत सरकार)
एमपीईडीए भवन, पनंपिल्ली एवन्यू, डाक पेटी सं 4272,
कोच्ची- 682036, भारत

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण - कोच्ची में
सुश्री रीता तेवतिया, माननीय सचिव,
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

MINISTRY OF COMMERCE & INDUSTRY, GOVERNMENT OF INDIA)
MPEDA

सागरिका

राजभाषा समर्पित अर्धवार्षिक गृह-पत्रिका

संरक्षक
डॉ.ए.जयतिलक, भा.प्र.से., अध्यक्ष

मार्गदर्शक
श्री.बी. श्रीकुमार, सचिव

संपादक
श्री हिमांशु श्रीवास्तव, उप निदेशक (रा.भा.)

उप संपादक
श्रीमती तुलसी नायर, हिन्दी अधिकारी

सम्पादन सहयोग
श्रीमती मृणालिनी पी आरेकर, व.हि.अनुवादक
श्रीमती संगीता जी, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
श्रीमती सिंधु ए एस, हिन्दी टंकक

पत्राचार का पता
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय,भारत सरकार)
एमपीईडीए भवन, पनंपिल्ली एवन्यू,
डाक पेटी सं 4272, कोच्ची- 682036, भारत
दूरभाष - 91 -484 - 2323245
फैक्स - 91 - 484 - 2313361

अनुक्रमणिका

08 पश्चिम बंगाल

15 तितलियां

22 संम्प्रेषण के साधन की मानव जीवन में भूमिका

32 सहित्यकार - कमलेश्वर

36 प्रदूषण एक समस्या

38 हिंदी की व्यावहारिकता

41 निर्मलजीत सिंह सेखों-वीरता की अमर कहानी

44 युवा पीढ़ी

47 भारत में जैव जलकृषि विकास - समस्याएं और संभावनाएं

54 वार्षिक कार्यक्रम - **2017-18**

56 लाजवाब और तीखी फिश करी

पश्चिम बंगाल विशेषांक

पश्चिम बंगाल विशेषांक होने के कारण मुख्य पृष्ठ पश्चिम बंगाल की कला व संस्कृति से प्रेरित है।

डॉ.ए. जयतिलक, भा.प्र.से
अध्यक्ष
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष

प्रेरणोक्ति

स्वस्थ विचार और स्वस्थ मानसिकता हमें उत्साहपूर्वक कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। हम सभी राष्ट्र की संपन्नता से सम्बद्ध होकर न केवल गौरवान्वित महसूस करते हैं, वरन इससे विश्व के भौगोलिक पटल पर हमारी एक अलग पहचान भी बनती है और इसे बनाए रखने के लिए हमें अपने दायित्वों को भलीभांति सम्पन्न करना होता है। हमारी एकता, सोच और संवेदनशीलता ही हमें अपने कार्यों के प्रति शक्ति प्रदान करती है। जिस प्रकार लक्ष्य सामने हो तो मन की एकाग्रता आवश्यक होती है, उसी प्रकार पारस्परिक ताल-मेल भी हमारे कार्य का महत्वपूर्ण अंग है।

निर्यात विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि करने के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण को लगातार मिल रही सफलताओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि संगठन ने सफलताओं का नया अध्याय लिखना प्रारम्भ कर दिया है। अभी हाल में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा प्राप्त बधाई संदेश के अनुसार हमारे संगठन को लगातार दूसरे वर्ष राजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार हेतु चुना गया है जो अपने आप में गर्व की बात है। समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण को प्राप्त इस उपलब्धि के लिए संगठन का प्रत्येक कर्मचारी बधाई का पात्र है।

सागरिका का 72वां अंक राजभाषा हिन्दी के प्रति संगठन के कर्मचारियों के मन में और भी उत्साह पैदा करेगा, इस अपेक्षा के साथ प्रस्तुत अंक के प्रकाशन हेतु बधाई।

बी श्रीकुमार
सचिव
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

सचिव

उद्गार

किसी भी भाषा को लोकप्रिय बनाने में उस भाषा की पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका सर्वाधिक महत्तवपूर्ण होती है और समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण संगठन में हिन्दी भाषा को लोकप्रिय बनाने का श्रेय जाता है संगठन की राजभाषा को समर्पित लोकप्रिय अर्धवार्षिक पत्रिका सागरिका को। सागरिका का प्रकाशन एक ऐसा माध्यम बन गया है जिसने संगठन में कार्यरत कार्मिकों की साहित्यिक भावनाओं को प्रकट करने के लिए एक मंच प्रदान किया है।

हमारा संगठन राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण प्रयासों के साथ आगे बढ़ रहा है। देश के विभिन्न राज्यों में स्थित समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण के क्षेत्रीय कार्यालय इस दिशा में स्वयं को सक्रिय रखने के प्रति प्रयासरत हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में संगठन की राजभाषा गृहपत्रिका सागरिका का प्रकाशन संगठन के समस्त कार्यालयों और कार्मिकों के बीच राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में एक सार्थक एवं सृजनात्मक प्रयास सिद्ध होगा।

सागरिका के इस 72 वें अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

(बी. श्रीकुमार)

सम्पादक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

विशेष प्रयास के फलस्वरूप सागरिका का प्रस्तुत अंक पश्चिम बंगाल विशेषांक है, जाहिर है कि पत्रिका के इस अंक में पश्चिम बंगाल राज्य से संबन्धित अनेक सामग्रियाँ संकलित करके आपके लिए गागर में सागर स्वरूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। सागरिका आज इस संगठन की महत्वपूर्ण पहचान बन गयी है। इस पत्रिका में प्रस्तुत लेख न केवल सूचनापरक बल्कि प्रेरणा से भरपूर हैं। जहां एक ओर तकनीकी विषयों का समावेश किया जा रहा है वहीं दूसरी ओर साहित्य, सृजन और संगठन से जुड़े पहलुओं को भी पूरा सम्मान दिया जा रहा है।

कई वर्षों के अनवरत प्रयासों का परिणाम है कि सागरिका पत्रिका एक नवीन ऊँचाई की तरफ दिन प्रतिदिन बढ़ रही है और सफलताओं के नए आयाम हासिल करती जा रही है। वर्ष 1997 में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में 20 पेजों से पदार्पण करने वाली यह पत्रिका 20 वर्षों का सफर पूरा करते हुए वर्ष 2017 में अब 60 पेजों तक पहुँच गयी है।

पत्रिका के प्रस्तुत अंक में प्रकाशित लेख एवं रचनाएँ एक ओर जहाँ हिंदीत्तर भाषियों की रचनात्मकता को दर्शाती हैं, वहीं दूसरी ओर हिन्दी भाषा के प्रति उनके प्रेम को भी। अंत में, मैं सभी लेखकों एवं रचनाकारों के प्रयासों की सराहना करते हुए पत्रिका में प्रकाशन के लिए दिये गए लेखों हेतु धन्यवाद भी देता हूँ

आशा करता हूँ कि सागरिका का यह 72 वाँ अंक पाठकों के मानस पटल पर एक अमिट छाप छोड़ेगा।

(हिमांशु श्रीवास्तव)

पश्चिम बंगाल

सामान्य परिचय

सामान्य जानकारी

- स्थान : अक्षांश 21038' उ 27- 016' उ
  देशांतर 85038' पू 89- 050'पू
- कुल क्षेत्र : 88551 वर्ग कि.मी.
- जिलों की सं : 20
- तटवर्ती जिले : 2(दक्षिण परगाना 24 एवं पूर्व मेदिनीपुर)
- कुल जनसंख्या : 91276115 (2011 की जनगणना के अनुसार)
- अंतर्देशीय मछुआरा गाँव : 6348
- समुद्री मछुआरा गाँव : 1237 सं. 188 जी पी
- मछुआरा जनसंख्या : अंतर्देशीय 26,13,163
  समुद्री 3,80,138
  कुल - 29,93,301
- तट रेखा : 158

मात्स्यिकी संसाधनः

अंतर्देशीय सेक्टर : 2014-5

क्रम सं.	मात्स्यिकी का प्रकार	क्षेत्र (लाख हे. में)	उत्पादन (लाख टन)
1	तालाब/टंकी	2.88	11.296
2	बील/बेर	0.42	0.577
3	खारा पानी मात्स्यिकी	0.60	1.641
4	सीवेज फेड फिशरी	0.04	0.027
5	जलाशय	0.28	0.019
6	शीत जल		0.004
7	नदी	1.64	0.052
8	नाला	0.80	0.021
9	अन्य (मुहाने, जलानुविद्ध आदि).	1.50	0.745
10	कुल	4.22	14.38

वैज्ञानिक अक्वा फार्म्स

मत्स्य पत्तन एवं अवतरण केंद्र

1.समुद्री संसाधन :

क्र.सं .	समुद्री पर्यावरण	क्षेत्र
1	नदी किनारे का क्षेत्र (10 फैथम गहराई तक)	777 वर्ग कि मी
2	अपतटीय क्षेत्र (10-40 फैथम गहराई)	1813 वर्ग कि मी
3	महाद्वीपीय जलसीमा (फैथम गहराई तक)	17049 वर्ग कि मी
4	तट रेखा	158 कि मी

पश्चिम बंगाल में उत्पादन :

क्र सं	विवरण	2013-14	2014-15	2015-16
1.	मत्स्य उत्पादन (लाख टन)	15.80	16.17	16.71
	अंतर्देशीय	13.92	14.38	14.93
	समुद्री	1.85	1.79	1.78203
2.	श्रिम्प उत्पादन (टन)	112815		108758
3.	मत्स्य बीज उत्पादन (मिलियन)	15890		

प्रसंस्करण संयंत्र

सूखा मत्स्य

पश्चिम बंगाल में मात्स्यिकी

वर्ष 2014- 15 के दौरान जिलावार सूखा मत्स्य उत्पादन

क्र सं	जिला	मात्रा (टन)
1	दक्षिण 24 परगना	3259.0
2	पूर्व मेदिनीपुर	12045

वर्ष 2014-15 के दौरान जिलावार समुद्री मत्स्य उत्पादन

क्र सं	जिला	मात्रा (लाख टन)
1	दक्षिण 24 परगना	0.520
2	पूर्व मेदिनीपुर	1.270

वर्ष 2015-16 के दौरान जिलावार समुद्री मत्स्य उत्पादन

क्र सं	जिला	मात्रा (लाख टन)
1	दक्षिण 24 परगाना	0.53089
2	पूर्व मेदिनीपुर	1.25114

समुद्री निर्यात - पश्चिम बंगाल

	2012-2013	2013-2014	2014-2015	वृद्धि (%)	2015-2016	वृद्धि (%)
मात्रा (मा:)	66941.00	67748.00	84994.00 टी	26.58	91054.00	7.13 (+)
मूल्य (करोड रु.में)	1825.12	3053.46	3686.35	20.73	3430.99	6.93 (-)

निर्यात अवसंरचना

- **पंजीकृत निर्यातक** : 164 (25 ई यू निर्यातक)
  - निर्माता निर्यातक : 52
  - व्यापारी निर्यातक : 91
  - मार्गस्थ निर्यातक : 09
  - आलंकारिक मत्स्य निर्यातक : 12
- **प्रसंस्करण संयंत्र (प्रशीतित+सूखा)** : 39+1 (ई यू -17, गैर ई यू- 22)
- **हैंडलिंग केंद्र** : 31
  - जीवित मत्स्य हैंडलिंग केंद्र : 09
  - ताजा /शीतित हैंडलिंग केंद्र : 11
  - सूखा मत्स्य हैंडलिंग केंद्र : 11
- **भंडारण परिसर** : 57
  - शीत भंडार : 45
  - सूखा भंडार : 11
  - मत्स्य आहार : 01
- **हिम संयंत्र** : 02
- **पीलिंग शेड** : 46
- **परिवहन** : 04
- **मत्स्यन यान (पंजीकृत)** : 463

पश्चिम बंगाल में 9629 वर्ग कि. मी. अद्वितीय सदाबहार वनस्पति "सुंदरबन" है, जिसमें 102 द्वीप हैं। अपनी विशिष्टता, विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा एवं सदाबहार होने एवं ग्लोबल वार्मिंग का सामना करने में (मानव सभ्यता) अपनी उपस्थिति के अत्यधिक महत्व के कारण वर्ष 1986 में यूनेस्को ने सुंदरबन को "बायोस्फीयर रिज़र्व और वर्ल्ड हेरिटेज साइट" का दर्जा दिया है। इसमें 40 से अधिक स्तनपायी प्रजातियाँ, 270 पक्षी प्रजातियाँ, 45 सांप प्रजातियाँ, 11 उभयचर प्रजातियाँ और 120 मत्स्य (फिन और शेल फिश) प्रजातियाँ हैं ।

इमदाद के लिए मत्स्यन यानों का निरीक्षण

आलंकारिक मत्स्य प्रजनन यूनिट

एमपीईडीए, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के कार्यकलाप

- वाणिज्य विभाग, एमओसीआई के अधीन स्वायत्त निकाय को देश के मत्स्य एवं मात्स्यिकी उत्पादों के समग्र विकास, संवर्धन एवं निर्यात का दायित्व
- देशभर में मत्स्यन एवं जलकृषि के साथ-साथ फ़सलोत्तर एवं प्रसंस्करण कार्यकलापों जैसे उत्पादन आधार के लिए बुनियादी ढांचे का विकास
- पूरी उत्पादन श्रृंखला में गुणवत्ता नियंत्रण रखता है और निर्यात निरीक्षण परिषद के योगदान में सहयोग
- निर्यातित सभी मात्स्यिकी उत्पादों का पता लगाना सुनिश्चित करना
- मत्स्यन यानों, निर्यातकों, प्रसंस्करण संयंत्रों, पीलिंग शेडों, परिवहनों का पंजीकरण
- ई यू देशों के लिए लक्षित निर्यात के लिए पकड़ प्रमाणपत्र का वैधीकरण
- समुद्री उत्पादों के निर्यात का विनियमन
- समुद्री उत्पादों का बाज़ार संवर्धन
- समुद्री उत्पादों के विभिन्न पहलुओं में प्रशिक्षण
- मत्स्य निर्यात डेटा का संग्रह, संकलन और प्रचार-प्रसार सुनिश्चित करना
- मत्स्य गुणवत्ता के विभिन्न पहलुओं पर जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन
- मात्स्यिकी विभागों, वित्तीय संस्थानों, मात्स्यिकी संस्थानों और अन्य सरकारी गैर सरकारी संगठनों के साथ संपर्क
- **मत्स्य गुणवत्ता प्रबंधन और चिरस्थाई मत्स्यन के लिए नेटवर्क (नेटफिश)** की स्थापना मात्स्यिकी उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार और चिरस्थाई मत्स्यन एवं समुद्री संसाधनों के संरक्षण पर मछुआरों के बीच जागरूकता

पैदा करने हेतु तृणमूल स्तर पर मत्स्यन और मत्स्य प्रसंस्करण क्षेत्रों के क्षमता निर्माण के लिए की गयी है।

विस्तारण और प्रशिक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट ता के लिए अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय संस्थानों के साथ घनिष्ठ समन्वयन में काम करता है। ऐसी एजेंसी मछुआरों और मत्स्य कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान करने और इस तरह फसलोत्तर हैंडलिंग में एक "बेट्टम अप दृष्टि कोण" लाने में और अधिक प्रभावी होगा। मछुआरों केलिए, नुक्कड़ नाटक, स्कूल के कार्यक्रम, चिकित्सा शिविर, मत्स्य गुणवत्ता और संरक्षण के विभिन्न पहलुओं पर संगोष्ठी और कार्यशाला, ऑल इंडिया रेडियो आदि के माध्यम से जन जागरूकता का आयोजन किया जाता है।

- **राष्ट्रीय चिरस्थाई जलकृषि केंद्र (नाक्सा),** एमपीईडीए का आउटरीच संगठन है जो छोटे कृषकों को प्राथमिक जलकृषि सोसाइटी बनाने, एक चिरस्थायी रीति से गुणवत्तापूर्ण श्रिम्प का उत्पादन करने के लिए उनके क्षमता निर्माण हेतु तकनीकी सहायता प्रदान करने का आयोजन करता है तथा जलकृषि पणधारियों के बीच संबंध सुगम बनाता है।

  उत्तम प्रबंध तरीकों, कार्यनीतियों और स्वैच्छिक दिशानिर्देशों के गठन को सुगम बनाता है जो पूरे श्रिम्प कृषि समुद्राय को लाभ पहुंचाता है ।

- **आलंकारिक मत्स्य प्रभाग (ओएफ़डी) ओएफ़डी** योजना के कार्यान्वयन, के लिए काम कर रहा है। आलंकारिक मत्स्य के निर्यात को बढ़ावा देने के संबंध में जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन, मात्स्यिकी विभाग, वित्तीय संस्थान और अन्य सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों के बीच संपर्क रखता है ।

पश्चिम बंगाल में आयोजित "फिश-फेस्ट" में एमपीईडीए की प्रतिभागिता की एक झलक

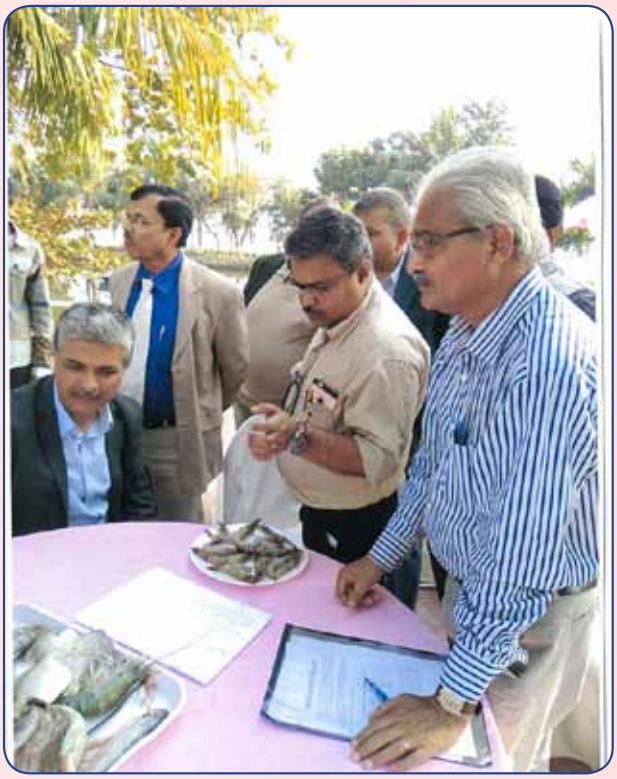

तितलियां

श्री इ.वी. रैजी द्वारा मलयालम पत्रिका
'गृहलक्ष्मी' में लिखी कहानी का हिन्दी अनुवाद

सैक-लैन विला की सातवीं मंज़िल में एकल परिवार की तरह रहते हुए, उस दिन सिस्टर शैंटी का फोन कॉल किसी दिन देखे हुए एक दुःस्वप्न की शुरुआत की तरह आया।

बेटी को स्कूल मत भेजना, आज स्कूल की छुट्टी है, स्कूल के पूर्व प्रबन्धक तैक्कूट्टिलच्चन आज सुबह .....

अप्रत्याशित होने के बावजूद उस मौत ने सुरेश के मन को स्पर्श नहीं किया। परंतु उससे उत्पन्न हुई अम्मू की छुट्टी, उसके मन में अचानक एक प्रश्नचिन्ह बनकर

उभरने लगी। इसीलिए इस बीच न कुछ बोल पाया न ही कुछ पूछ पाया। ठीक है, बस इतना बोल पाया। सिस्टर ने क्या साचा होगा, इस बात की ज़रा भी ग्लानि उसे नहीं हुई। बस, क्षण भर के लिए यह बात उसके मन में आई।

इस्तरी करने के लिए उठाए हुए शर्ट को कंधे पर डालकर खिड़की से नीचे की ओर देखा। स्कूल बस का इंतज़ार करते स्कै -लैन के बच्चे, कई रंगों के फूलों की तरह लग रहे थे। उस बीच से हल्के पीले फूल को उसे ढूँढना नहीं पड़ा। उसकी आंखों ने अम्मू को ढूंढ लिया।

मंजू नहा रही थी । बाथरूम के दरवाजे पर जाकर सुरेश ने उससे कहा.....

अम्मू की आज छुट्टी है , सिस्टर ने अभी बुलाया था।

नहाकर मंजू बाहर आयी ।

ऐसा क्या .....! अरे, अब बच्ची का क्या .....?

उस प्रश्न का उत्तर मिले बिना सुरेश ने फिर से ख़िडकी से नीचे देखा ।

अभी अम्मू अकेली थी । बाकी बच्चों की गाड़ियां आकर चली गयी थीं। नीचे, रेगिस्तान में अकेले पड़ जाने वाले छोटे फूल की तरह खड़ी अम्मू को देखकर आधी इस्तरी की हुई शर्ट को जल्दी पहनकर सुरेश नीचे गया ।

अम्मू का क्या करेंगे, इस आशंका के गहरे गर्त से होकर गुजरने की तरह सुरेश नीचे गया। मंजू कुछ बोलने या पूछने के लिए पहुंचे इससे पहले ही वह नीचे जा चुका था। फिर वह भी अम्मू के बारे में और ऑफिस जाने की अनिवार्यता के बारे में सोचते हुए कमरे के अंदर गयी ।

अम्मू को गोद में उठाकर सुरेश लिफ्ट में चढ़कर ऊपर आया । इस बीच उसने अम्मू से

कहा ...

बिटिया आज छुट्टी है । थोड़ी देर पहले सिस्टर ने बुलाया था .....

उनके कमरे के अंदर आते ही मंजू ने अम्मू को लेकर चूमा । उसके छोटे चेहरे पर खुशी थी।

मंजू माँ , आज मेरी छुट्टी है । लक्की लिट्टिल .... गणित का होमवर्क मैंने ठीक से नहीं किया था...

अच्छा, ऐसी बात थी .....!

ऐसा बोली पर उसके चेहरे का भाव नहीं बदला। सुरेश का भी । वो दोनों बच्ची के चेहरे को ही देख रहे थे। क्षण भर में, समय रूपी भय के गर्त में धंसती हुई मंजू ने सुरेश से कहा ।

क्या करें सुरेश, आज मुख्यालय में मीटिंग है, ठीक दस बजे ही ऑफिस से निकलना है, ऐसा सी.ई.ओ. ने कहा था.....

मंजू की इस स्थिति पर प्रतिक्रिया व्यक्त न करते हुए सुरेश बाहर की ओर देख कर खड़ा रहा। उसकी स्थिति भी अलग नहीं थी । आधी इस्तरी की हुई शर्ट को उतारकर उसे पूरा करने के लिए टेबल के पास गया। इस्तरी करते हुए उसने मंजू से पूछा .....

उस देवकी दीदी को एक बार और बुलाकर देखें क्या .....

पूछने का फायदा नहीं है सुरेश । उसने कहा था न, कि आज उसे अस्पताल में पति को दिखाने ले जाना है.....

फिर भी बाल बनाते हुए मंजू ने उन्हें बुलाया । पर उसके उत्तर में वही दैन्यता थी...

अभी मैं क्या करूं। सबेरे ही इनको लेकर मैं यहाँ आ गयी थी । अभी अस्पताल में हूँ .....

फिर ज्यादा कुछ बोले या पूछे बिना मंजू ने फोन काट दिया ।

नहीं वो नहीं आ पाएँगी .....

मंजू अपने आप में ही बोली । सुरेश ने लंबी सांस लेते हुए क्लॉक की ओर देखा । समय रूपी यंत्र की सुई ने बढ़कर चेतना को छुआ तो वह जल्दी से ड्रेसिंग रूम में चला गया । मंजू ड्रेसिंग टेबल के सामने खड़े होकर तैयार हो रही थी। दर्पण में अपनी ही छवि से उसने कहा....

हर समय मीटिंग के समय साड़ी पहनकर ही जाती थी। आज अब छोड़ो, चुरीदार ही चलेगा ।

मंजू ने जल्दी से चुरीदार पहनी। बालों को बस थोड़ा संवारा। बिना ज्यादा सजे-संवरे, बिल्कुल साधारण रूप में .....

सुरेश के वहाँ पहुँचने पर मंजू ने आईने में ही देखकर उससे पूछा

किसे बुलाया था ...?

मैं उस मूर्ति को बुलाकर देख रहा था । कोई अडजस्टमेंट हो सकता है कि नहीं....

पर वो नहीं माना । किसी में भी मानवता नाम की चीज़ नहीं है, बिजनेस-बिजनेस.....

फिर ज्यादा कुछ बोले या पूछे बिना दोनों उस आईने से बाहर अपनी दयनीय व्यस्तता में डूबते चले गए ।

इस बीच अम्मू अपना यूनिफ़ार्म बदलकर एक दूसरा ड्रेस पहनकर अपनी गुड़िया लेकर सिट-आउट में एक कुर्सी पर जाकर बैठ गयी । वो गुड़िया की पलकों को धीरे-धीरे सहलाती हुई खेल रही थी ।

सुरेश अम्मू के पास पहुंचा । उसने गुड़िया को सहलाती हुई अम्मू को उठाकर गोद में बिठाया।

उसके बालों को सहलाने के सिवाय वो उससे कुछ पूछ नहीं पाया।

सुरेश क्या जाने के लिए तैयार हो गए? उपमा खा लो फिर चलते हैं ....

नहीं, मुझे अभी भूख नहीं है। तुम्हें चाहिए तो खा लो ....

नहीं, मुझे भी भूख नहीं है........

वे कुछ भी खाने की मानसिक स्थित में नहीं थे, फिर जल्दी ही वे दोनों जाने की तैयारी में जुट गए। रसोई से वापस आकार मंजू, अम्मू के पास जाकर बैठी। फ्रिज के कोने में कभी भूल कर रखे मिल्की बार को उसने अम्मू के हाथ में पकड़ाया।

देखो तुम यहाँ बैठो, ठीक है ....मैं और मंजू माँ ऑफिस के बाद तुरंत घर आ जाएँगे........

परंतु मिल्की बार या मंजू के चेहरे की तरफ ध्यान दिये बिना अम्मू ने बस हामी भरी । वो बड़े

ही कौतूहल के साथ उस गुड़िया की पलकों को सहलाती बैठी रही।

मंजू ने अम्मू को उठाकर अपनी गोद में बिठाया।

दोपहर आपको भूख लगी तो स्कूल बैग से चावल निकालकर खा लेना। बीच में कुछ चाहिए होगा तो डाइनिंग टेबल पर बिस्कुट और आम का जूस रखा है। टी वी का स्विच ऑन कर देती हूं । कार्टून या कोच्चु टी वी (बच्चों का कार्यक्रम प्रसारित करने वाला चैनल) देख लेना या फिर पिछले हफ्ते हमने जो बलभूमि, कलिक्कुडुक्का खरीदा था, वो पढ़ लेना ।

सब बातों के लिए अम्मू भावशून्य सी सिर्फ हामी भरती रही । सुरेश भी कुछ विशेष नहीं कह पाया और उसने बेटी को एक चुम्मी दी। उसके हाथ में बाहर के दरवाजे की चाभी थी। एक अस्वस्थ जीव की तरह चाभी का गुच्छा हथेली में आवाज़ करता रहा। वे बाहर निकले । दरवाजे पर ताला लगाते हुए उसने अम्मू के चेहरे की ओर ध्यान से देखा । अम्मू अभी गुड़िया को छोड़कर खुली हुई ख़िडकी के पास पहुंची। उसने अपना हाथ बाहर डाला। उसको टाटा करते हुए मंजू भी सीढी उतरने लगी। उस समय भी टाटा न कर पाने की विवशता के साथ अम्मू का हाथ बाहर की ओर ही बढ़ा हुआ था...... उनको यह आशंका हुई कि कहीं अम्मू के चेहरे का भाव तो नही बदला। लेकिन जल्दी के कारण दोबारा मुड़कर देखे बिना उन्हें नीचे जाना पड़ा।

नीचे, गाड़ी सड़क की ओर निकालते वक्त हमेशा की तरह बलविंदर ने हाथ उठाकर दिखाया। परंतु उसके चेहरे पर हमेशा न दिखने वाली फीकी हँसी को देखकर सुरेश थोड़ा अस्वस्थ हुआ । अचानक उसने बलविंदर से कहा बिटिया अकेली

है, ज़रा उसका ख्याल रखना .....

सड़क पर भीड़ थी । शहर की अनगिनत सडकों पर गाड़ियों का प्रवाह । ड्राइव करते हुए सुरेश हमेशा की तरह बातें नहीं कर पाया। मंजू भी शोरगुल वाले शहर की सड़कों पर आँखें गड़ाए बैठी रही और सुदूर गाड़ियां धीरे धीरे धूमिल होती चली गईं ।

मंजू.....उस दिन तुमने जो कहा था , आज मुझे याद आ रहा है....... अभी ऐसा सब लगेगा। जीना शुरू करने पर प्रारम्भ होती हैं एक-एक परेशानियां । बिना किसी के सहारे के कैसे............ !

वो सब कोई बात नहीं, बोलते हुए भी तुम्हारी आंखों में आशंका नज़र आई थी। उस वक्त भले ही समझ नहीं पाया .... आज, सब मुझे समझ आ रहा है। सब योग्यताएं होने के बावजूद, निचली जाति के लड़के से शादी करने वाली बेट ी को न अपना सकने वाले मेरे माता पिता, यह समाज .... पाखंडी है यह समाज। मुझे दुख नहीं है, घृणा और डर है इस समाज से.........

ऐसा सब बेलने के बावजूद भी कभी-कभी अकेलापन कचोटने लगता है। यहां तक कि सुरेश तक से शेयर न कर पाने वाली इन सात वर्षों में तुमने भी मुझे सिर्फ चार या पाँच बार बुलाया है। वो भी पहले के दो तीन वर्षों में, फिर तुम भी ....

मंजू की आंखें भर आईं । उसने धीरे से सुरेश के चेहरे की ओर देखा । उसे लगा मानो सुरेश ने उसका मन पढ़ लिया हो । आँखें पोछकर वो फिर दूर देखने लगी। किसी मोड़ पर मुड़कर कार सँकरे रास्ते से होकर जा रही थी । सुरेश ने मंजू के चेहरे की ओर देखा ।

उस समय उसे यह आशंका हुई कि, सहारे केलिए किसी के भी न होने की इस अवस्था से गुजरते हुए मंजू कहीं ऐसा तो नहीं सोच रही कि यह सब कुछ नही होना चाहिए था। उसी ने तो सबकी शुरुआत की थी और उसे पूरा धैर्य भी दिया था......

गाड़ी मंजू के ऑफिस के सामने जाकर रुकी । कार से उतरते हुए उसने कहा ....

सुरेश बीच में बुलाना ...

सुरेश ने सिर हिलाकर गाड़ी आगे ली । ऑफिस पहुँचने के लिए करीब दस मिनट और सफर करना पड़ेगा। कार में अकेला पड़ने पर उस अकेलेपन ने उसे बेचैन कर दिया। सडकों पर उमड़ रही गाड़ियों और भीड़ के बीच वो अपने को अकेला महसूस कर रहा था। उस भय ने गाड़ी की गति को और तेज़ कर दिया।

ऑफिस की कार पार्किंग में पहुँचने में उसे दस मिनट भी नहीं लगा। फिर जल्दी निकलकर ऑफिस के अंदर चला गया।

ऑफिस की व्यस्तता के बीच अचानक मन में एक संदेह उठा ....इस उत्कंठा ने सुरेश को झकझोर कर रख दिया। हे भगवान... वो ताला ठीक से लगा भी है या नहीं ....? मन के अंदर से कोई कह रहा है कि घर बंद करने की जल्दी में ताला ठीक से नहीं लगा है.....। या फिर ऐसा सिर्फ लग रहा है..... ? शायद टेंशन की वजह से लग रहा होगा .....नहीं, वो नहीं लगा होगा.....! समस्या है .....

अचानक सुरेश को कंप्यूटर की स्क्रीन से सब कुछ धुंधला होता लगा। काम कर रहे फाइलों के अक्षर और अंक धुंधले होते लगे.....फिर शून्य में छोटे बोलों वाले एक सर का पिछला भाग उभर कर आया। फिर धीरे-धीरे वह मुड़ा बलविंदर .....! बकरे जैसी दाढी वाला उसका घिन पैदा करने वाला चेहरा।सुरेश के चेहरे की तरफ देखकर वो हँसा । फिर उसने सेक्यूरिटी कैंप के अंदर से बाहर निकलकर स्कै-लैन विला की सातवीं मंज़िल को देखा । फिर सीढ़ियों की तरफ बढ़ा । एक-एक कदम बढ़ाने के साथ-साथ सुरेश का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कता रहा ।

थोड़ा ध्यान रखना, ऐसा बोलना गलत हो गया क्या, हे भगवान.....? इस तरह की दुर्घटना इसमें छुपी है, इस बात का अंदाज़ न हो पाना तो धोखा हो गया .....!

सुरेश ने जल्दी से कंप्यूटर से मुँह फेरकर मोबाइल उठाकर मंजू को बुलाया । लेकिन वो सीमा के बाहर थी । फिर से बुलाया तो स्विच ऑफ आया । बार-बार कोशिश करने पर भी विफल हो गया । ख़डे-ख़डे ही उसके पसीने छूट ने लगे,उसने जल्दी से कंप्यूटर को बंद किया । बगल की कैबिन के बेन्सन तक से बोले बिना बैग लेकर वह बाहर निकला । पीछे से बहुत से लोगों द्वारा क्या हुआ सुरेश पूछने पर भी उसने वो सब नहीं सुना ।

सुरेश की कार शहर की भीड़ को चीरती हुई

तेजी से स्कै-लैन विला की ओर दौड़ रही थी । उसे इस बात का अहसास तक नहीं हो पा रहा था कि इस तेजी के कारण दुर्घटना भी हो सकती है ।

बीच-बीच में कार का हॉर्न ज़ोर - ज़ोर से बजाता रहा । आम तौर पर लगने वाला आधा घंटा भी नहीं लगा पहुँचने में बल्कि सिर्फ पंद्रह मिनट में स्कै-लैन विला के नीचे वो पहुँच गया। पहले उसका ध्यान सेक्यूरिटी के कैबिन की ओर गया। वहाँ बलविंदर के न दिखाई देने से उसकी व्यग्रता और बढ़ गयी । लिफ्ट अपने स्विच बोर्ड की लाल बत्ती से उसे घूर रही थी ।

सातवें नंबर को अपनी उंगली से उसने जल्दी दबाया । सात नंबर के सामने वाली लाल आँख एक बार जली पर लोहे का दरवाजा नहीं खुला ।

एक दो बार फिर उसने स्विच दबाया पर उस लाल आँख ने मज़ाक उड़ाने की तरह सिर्फ आँख मींचा पर दरवाजा नहीं खुला ।

फिर सुरेश सातों मंज़िल सीढ़ी चढ़कर पसीने से तर घर के सामने पहुंचा। हाँफते हुए जेब से चाभी निकालकर लॉक में डाला। हथेली बाईं ओर घूमी तो दरवाज़ा खुल गया। दरवाज़ा बंद रहने की तसल्ली उसे महसूस हुई भी या नहीं, पता नहीं। व्याकुलता भरी आवाज़ में उसने अम्मू को आवाज़ दी ...

अम्मू ....बिटिया....अम्मू....

सुबह जहां अम्मू को बिठाया था वो वहाँ नहीं थी। बस वो गुड़िया वहाँ.....उसकी आँखों की चमक मानो नष्ट हो चुकी हो.....सुरेश का दिल काँप उठा । वो जल्दी डायनिंग हॉल गया । वहाँ खाने और पीने के लिए जो रखकर गए थे वो जैसे का तैसा रखा था ।

अम्मू ....बिटिया.....

उसकी आवाज़ में घबराहट थी । वो जल्दी से बेडरूम गया ।

अम्मू ....

खटिए के एक छोर पर उल्टी लेटी अम्मू कुछ तस्वीर बना रही थी अम्मू ने सिर घुमाकर सुरेश को देखा । उसके चेहरे पर एक मुस्कुराहट थी । उसने जल्दी से बेटी को उठाकर चूमा ।

तुम क्या कर रही थी .....?

अम्मू ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा.....

मैं .....मैं.....नहीं तो छोड़ो .....पापा आप पहले आँखें बंद करो .....

सुरेश ने आँखें बंद कीं ।

हाँ .....अब खोलो .....

अम्मू ने बिस्तर की ओर इशारा किया ।

देखो.....मेरी बनाई तितलियाँ ....

सुरेश ने नजरें गाड़कर उस बड़े सफ़ेद कागज पर अम्मू की बनाई तितलियों को देखा ....

सुरेश को विश्वास नहीं हुआ क्योंकि तस्वीर बेहद खूबसूरत बनी थी ।

सुरेश को अचानक किसी के सीढी चढ़कर ऊपर आने का आभास हुआ। मुड़कर देखा तो भागकर दरवाज़े से अंदर आई मंजू सामने ख़डी थी। आते ही अम्मू को लेकर चूमा । फिर हॉफते हुए सुरेश से बोली ।

बिटिया....बिटिया को कुछ .....

सुरेश ने मुस्कुराते हुए कहा ....

नहीं ...कुछ नहीं हुआ है .....

चैन की सांस लेते हुए मंजू ने अम्मू को देखा। तब वो बोली.....

मंजू माँ, ये देखो मेरी बनाई तितलियाँ .....

अनुवाद : श्रीमती तुलसी नायर

संप्रेषण के साधन की मानव जीवन में भूमिका

संप्रेषण मानव जीवन की बुनियादी ज़रूरतों में से एक है, जिसके न होने की स्थिति में मानव का जीवन अधूरा है। अपने समाज में मानव कहीं संप्रेषित के रूप में संदेश संप्रेषित करता है, तो कहीं प्रापक के रूप में संदेश ग्रहण करता है। पुराने दिनों में संदेश भेजने और दूर-दूर से संदेश प्राप्त करने के लिए बहुत मुश्किल होता था। संदेशों और विचारों को भेजने के लिए आधुनिक दुनिया में संप्रेषण के साधन बहुत महत्वपूर्ण बन गए हैं । आधुनिक समय में हम दूर स्थानों के साथ आसानी से और जल्दी से संपर्क कर सकते हैं । आधुनिक युग मे मोबाइल फोन, पेजर और कंप्यूटर का आविष्कार होने से और इंटरनेट आने से ये पूरी

दुनिया बहुत ही नजदीक आ गई है। संप्रेषण एक व्यक्ति के रोजमर्रा के जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया है, सबके विचार और अन्य विचारों को व्यक्त करने के लिए संप्रेषण एक सक्षम साधन है । प्राचीन काल में एक स्थान से दूसरे स्थान तक संदेश भेजने के लिए 'दूत' भेजे जाते थे। उस समय एक स्थान से दूसरे स्थान तक संदेश भेजने में महीनों लग जाते थे। संप्रेषण अलग-अलग तरीके से कर सकते हैं, ये मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं।

गैर मौखिक संप्रेषणः गैर मौखिक संप्रेषण में भौतिक तरीके से शामिल हैं, तरह-तरह की आवाज़, स्पर्श, गंध और शरीर की गति के स्वर से संप्रेषण होता आया है । गायन, संगीत, नृत्य, वास्तुशिल्प, चिह्न और सांकेतिक भाषा भी गैर मौखिक संप्रेषण में शामिल हैं। शारीरिक मुद्रा और शारीरिक संपर्क जानकारी का एक बहुत अच्छा उदाहरण है। चेहरे का भाव, इशारा संप्रेषण के अलग-अलग तरीके हैं। पूरे विश्व में गैर मौखिक संप्रेषण का उपयोग होता आया है।

लिखित संप्रेषणः लिखित संप्रेषण व्यावसायिक प्रयोजनों के लिए आवश्यक है। लिखित संप्रेषण कई अलग-अलग भाषाओं में प्रचलित है। ई-मेल, रिपोर्ट, लेख में लिखित संप्रेषण का उपयोग कर सकते हैं । व्यावसायिक गतिविधि में संप्रेषण के प्रमुख साधन के रूप में लेखन का उपयोग किया जा सकता है। मोबाइल से एसएमएस भेजना अनौपचारिक लिखित संप्रेषण का एक उदाहरण है, पुरातन काल में भी लिखित संप्रेषण के उदाहरण मिलते हैं। जैसे कि पत्थर में लिखकर एक राजा से दूसरे राजा को संदेश भेजना। ई.पू. 3000 के आसपास, रोमन पेपिरस नामक पौधे का संदेश भेजने के लिए उपयोग करते थे। वैक्स, पत्तियों और लकड़ी पर भी संदेश लिखकर संप्रेषण के लिए उपयोग किया करते थे।

दृश्य संप्रेषण : दृश्य संप्रेषण जानकारी के दृश्य प्रदर्शन, फोटोग्राफी, लक्षण, प्रतीकों और डिजाइन की तरह हैं । टी.वी और वीडियो क्लिप्स दृश्य संप्रेषण के इलेक्ट्रोनिक रूप हैं । आधुनिक युग में दृश्य संप्रेषण सबसे ज्यादा उपयोगित है।

पुरातन काल से संप्रेषण के लिये लोग विविध चीजों का इस्तमाल किया करते थे जैसे कि,

(1) ड्रम और धूम्रपान संकेतों में बात करनाः पुराने जमाने में जंगल में रहने वाले लोग, संप्रेषण के साधन के लिये ड्रम के जरिये पड़ोसी जनजातियों और समूहों को संकेत भेजा करते थे। ढोल पैटर्न की आवाज से उन्हें जल्द ही घटनाओं का पता चलता था। धूम्रपान संकेतों से भी उन्हें जल्द ही घटनाओं का पता चलता था।

(2) सीटीः संप्रेषण के लिये ड्रम की तरह मुख सीटी के जरिये भी पड़ोसी जनजातियों और समूहों को संकेत भेजा करते थे ।

(3) धावकः लड़ाई के समय संदेश देने के लिए एक व्यक्ति 40 किलोमीटर तक की दूरी भागते थे। इसमें इंसान जल्दी ही थक जाता था। और ये इतना विश्वसनीय भी नहीं था।

(3)जानवरों का संप्रेषणः प्राचीन काल में प्रायः आवागमन और संप्रेषण के लिए घोड़ों आदि का प्रयोग करते थे । पक्षियों द्वारा संदेश भेजने के भी अनेक उदाहरण मिलते हैं । पहले के दिनों में, लोग संदेश भेजने के लिए जानवरों का इस्तेमाल

करते थे। इसमें पहला नाम आता है कबूतर का। 'कबूतर पोस्ट' भी कहा जाता था। विशेष रूप से कबूतरों का घर वापस आना, दिशा को एक उत्कृष्ट तरीके से भांपना और इस प्रकार व्यक्ति आसानी से अपने तरीके से संदेश प्राप्त कर सकते हैं। कागज़ के छोटे स्ट्रैप में संदेश लिखने के बाद संदेश पक्षी के पैर को संलग्न करके एक राज्य से दूसरे राज्य में आपातकालीन स्थिति में भेजा जाता था। उसमें घोडे, ऊंट, बैलगाड़ी भी शामिल थे। लेकिन इसमे बहुत सा वक्त जाया होता था और ये सब संप्रेषण के साधन विश्वसनीय नहीं थे। संप्रेषण अधिक आरामदायक बनाने के लिए बहुत से संशोधन किये गये।

टेलीग्राफ का अविष्कारः प्रागैतिहासिक पूर्वजों द्वारा स्थापित भाषा के आधार के साथ संप्रेषण में आधुनिक काल में क्रांति आई है। 1700 और 1800 में पहली टेलीग्राफ का आविष्कार किया गया। टेलीग्राफ प्रणाली एक ऐसा अविष्कार था कि अलग-अलग स्थानों से तारों पर विद्युत संकेतों को प्रेषित संदेशों का अनुवाद करके संप्रेषण किया जाता था । पहली टेलीग्राफ का 1749 में बानचेगी बारची द्वारा अविष्कार किया गया था। इससे संप्रेषण में तेजी आई, परंतु यह सुविधा सीमित लोगों के लिए ही उपलब्ध थी।

पोस्टल सुविधाः पत्र, संप्रेषण का सबसे आम साधन है । पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र, डाक टिकट, आदि, पत्र लिखने के लिए इस्तेमाल किये जाते हैं। मनीऑर्डर पैसे भेजने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है, और कुरियर सेवा डाक एवं स्पीड पोस्ट तत्काल संदेश भेजने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। त्वरित और बहुत जरूरी संदेशों

के लिए 'तार' कार्यालय के माध्यम से भेजा जा सकता था। इसलिए पत्र लेखन संप्रेषण का सबसे बुनियादी रूपों में से एक माना गया है। आधुनिक सभ्यता संप्रेषण में तेजी के लिए पत्र एक अच्छा साधन माना गया है। तार की खोज के साथ ही संप्रेषण के क्षेत्र में क्रांति का प्रारंभ हो गया। इसके द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक 'इलेक्ट्रॉनिक' यंत्रों की सहायता से तार के माध्यम से संकेत प्रेषित किए जाने लगे।

अखबार,पत्रिका और पुस्तकें : अखबार,पत्रिका और पुस्तकें बड़े पैमाने पर संप्रेषण के अच्छे साधन हैं। समाचार पत्र एक बहुत व्यापक प्रचलन है, और हर व्यक्ति को साक्षर होने में मदद करती है। वह एक जन संप्रेषण का माध्यम है।

टेलीफोनः टेलीफोन संप्रेषण का एक और साधन है। इसमे दो लोग दूर रहते हुए भी बात कर सकते हैं। इसके पश्चात् 'दूरभाष' के आविष्कार ने तो संप्रेषण जगत में हलचल ही मचा दी है।

टेलीफोन आंसरिंग मशीनः टेलीफोन के जरिये एक दूसरे से बात कर सकते हैं या संदेश भेज सकते हैं, परंतु कोई व्यक्ति जब वहाँ व्यक्तिगत रूप से उपस्थित नहीं है तो इस तरह के मामलों में एक टेलीफोन आंसरिंग मशीन बहुत महत्वपूर्ण है। टेलीफोन की घंटी बजते ही मशीन में एक पूर्व दर्ज संदेश दर्ज हो जाता है । रेल्वे और एयरलाइन के अधिकांश कार्यालयों में टेलीफोन आंसरिंग मशीन का उपयोग किया जाता है।

मोबाइलः एक लघु संदेश मोबाइल के माध्यम से जल्द से भेजा जा सकता सकते है। सही नज़रिए से अगर हम सोचें तो मोबाइल फ़ोन मनुष्य द्वारा और मनुष्य के लिए अभूतपूर्व अविष्कार है। मोबाइल तुरंत संप्रेषण के लिए उपयोग में ला सकते हैं। मोबाइल से भेजा हुआ संदेश प्राप्तकर्ता तुरंत, सेकंड या मिनट में प्राप्त कर सकते हैं।

रेडियो और टेलीविजनः रेडियो, टेलीविजन और समाचार पत्र बड़े पैमाने पर संप्रेषण के साधन रहे हैं। इन साधनों के माध्यम से हम हजारों लोगों के साथ संवाद कर सकते हैं। देश में कई रेडियो स्टेशन है। इन स्टेशनों से रेडियो कार्यक्रमों का

प्रसारण होता आया है। यह समाचार, संगीत, नाटक, कहानियाँ, कृषि जानकारी, भाषण, विज्ञापन और अन्य महत्वपूर्ण घोषणाएँ प्रसारण करता है। संप्रेषण का एक बहुत ही महत्वपूर्ण साधन टेलीविजन, खबर, जानकारी, शिक्षा, संगीत और लोगों के लिए मनोरंजन प्रदान करता हैं।

टेलेक्सः लिखे गए संदेश को टेलेक्स द्वारा बहुत जल्दी भेजा जा सकता है। इस सुविधा को विविध कार्यालयों, अक्सर एयरलाइंस, सरकारी कार्यालयों और अखबार के कार्यालयों द्वारा प्रयोग किया जाता है।

फैक्स : परंपरागत रूप में टेलीफोन आवाज वहन करती है, वैसे ही एक फैक्स मशीन मुद्रित संदेश रिसीवर तक लेकर जा सकती है। फोट ोकॉपी के रूप में तस्वीरें भी भेजी जा सकती है। 'फैक्स' मशीन के द्वारा कागज पर लिखे संदेशों को दूरभाष लाइनों की सहायता से दूर बैठे व्यक्ति को केवल कुछ ही सेकेंडों में भेजा जा सकता है।

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंगः संप्रेषण के क्षेत्र में 'वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग' भी वैज्ञानिकों की एक अद्भुत देन है। इसके माध्यम से दो या दो से अधिक व्यक्ति एक दूसरे से मीलों दूर रहकर भी आपस में बातचीत कर सकते हैं, तथा साथ ही परदे पर एक दूसरे को देखकर भी बातचीत कर सकते हैं। यह संप्रेषण में एक प्रकार की नई क्रांति है।

रडार और कृत्रिम उपग्रहः रडार ज्यादातर दुश्मन की जानकारी प्राप्त करने के लिए सशस्त्र बलों द्वारा इस्तेमाल किया जाता है। हवा में दुश्मन के विमानों की स्थिति का पता लगाने के लिए भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। वह हवाई अड्डों में हवाई यातायात नियंत्रण के लिए बहुत उपयोगी है। रडार और कृत्रिम उपग्रह से संप्रेषण के अनेक क्षेत्रों में तेजी आई है।

कंप्यूटर, इंटरनेट और ई-मेल की सुविधा : वर्तमान में संप्रेषण के क्षेत्र में वैज्ञानिकों ने अद्भुत सफलताएँ अर्जित की हैं। कंप्यूटर के आविष्कार के बाद इस क्षेत्र में प्रतिदिन नए आयाम स्थापित हो रहे हैं। संप्रेषण जगत में 'ई-मेल' की लोकप्रियता धीरे-धीरे बढ़ती ही जा रही है। ई-मेल के उपयोग या इससे होने वाले लाभ बहुआयामी हैं। आधुनिक युग में आपको केवल एक पत्र या मेल भेजने की जरूरत है, तो इंटरनेट हमेशा उपलब्ध है और अलग अलग विकल्प प्रदान कर सकते हैं। ई-मेल या इलेक्ट्रॉनिक मेल सबसे आम तरीकों में से एक हैं। जीमेल, याहू मेल की तरह एक ई-मेल के माध्यम से तुरंत संदेश भेज सकते हैं, कागज के एक टुकड़े पर लिखकर लिफाफे पर एक डाक टिकट लगाकर पैसा खर्च करके संदेश भेजने की अब जरूरत नहीं है। ई-मेल एक पत्र भेजने के माध्यम जैसा ही है, परंतु यह तुरंत सेकंड में प्राप्तकर्ता को मिल जाता है। आधुनिक युग में इंटरनेट ने पूरी दुनिया को नजदीक लाके खड़ा किया है। हम इंटरनेट पर किसी भी जानकारी के लिए सर्फ कर सकते हैं। सर्च इंजन के माध्यम से कुछ समय के भीतर ही जानकारी खोजने में मदद मिलती है। ई-मेल दुनिया के किसी भी हिस्से में जानकारी छोटे या थोक में भेजने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। डिजिटल इंडिया विजन में इंटरनेट के माध्यम से आगे गति संप्रेषण विकास में और ई-गवर्नेंस के लिए प्रगति के लिए तेज प्रोत्साहन प्रदान कर सकते हैं। उच्च गति इंटरनेट से बैंकिंग, टिकट बुकिंग के सभी प्रकार, धन हस्तांतरण बहुत आसान हो गया है। ई-मेल को फैक्स का ही उत्तम रूप माना जा सकता है।उच्च गति सुरक्षित इंटरनेट उपलब्ध कराने, डिजिटल बुनियादी सुविधाएं देने से बहुत लाभ मिलेगा। इंटरनेट

से प्रशासन सेवाएं ऑनलाइन जल्द से सामान्य व्यक्ति, गाँव तक उपलबध कर सकते हैं। इसमें संप्रेषण में नई क्रांति आई है। आज मानव सभ्यता प्रगति की ओर अग्रेसरित है, नागरिकों का डिजिट ल सशक्तीकरण यूनिवर्सल डिजिटल साक्षरता और भारतीय भाषाओं में डिजिटल संसाधनों / सेवाओं की उपलब्धता मानव की प्रगति के लिए अति महत्वपूर्ण है। यह विश्व के एक देश में बैठे लोगों को दूसरे देशों से जोड़ता है । इसका प्रमुख श्रेय संप्रेषण के आधुनिक साधनों को जाता है। संप्रेषण के क्षेत्र में मनुष्य की उपलब्धियों ने विश्व की दूरियों को समेटकर बहुत छोटा कर दिया है। परंतु, आज स्थिति पूर्णतः बदल चुकी है । इसके द्वारा व्यक्ति घर बैठे सैकड़ों मील दूर अपने सगे-संबंधियों व परिजनों से बात कर सकता है। इसके साथ ही संप्रेषण को और अधिक सुचारू एवं सक्षम बनाने हेतु अनुसंधान प्रारंभ कर दिए गए हैं। 'ई-मेल' के माध्यम से विश्व के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से हम संपर्क स्थापित कर सकते हैं । सबसे महत्वपर्ण बात यह है कि, इसमें होने वाला खर्च बहुत कम है । दूरभाष द्वारा स्थानीय बातचीत में उपभोक्ता को जो खर्च देना पड़ता है उतने ही खर्च में ई-मेल द्वारा विदेशों में बैठे व्यक्ति को संदेश भेजा जा सकता है । इलेक्ट्रॉनिक मेल द्वारा लोग द्विपक्षीय वार्ता भी कर सकते हैं । 'ई-मेल' के माध्यम से एक संदेश को हजारों लोगों को एक साथ भेजा जा सकता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि 'ई-मेल' ने विश्व संप्रेषण के क्षेत्र को कितना विस्तृत कर दिया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मनुष्य ने संप्रेषण के क्षेत्र में असीम सफलताएँ अर्जित की हैं। आज इन्हीं सफलताओं व उपलब्धियों के कारण विश्व के सभी देशों का आपसी संपर्क बढ़ा है। भारत में बैठे हुए भी दुनिया के दूसरे देश के कोने में होने वाली घटनाओं से हम तुरंत अवगत हो जाते हैं। संप्रेषण के क्षेत्र में मानव की उपलब्धियों के कारण ही आज संपूर्ण विश्व की दूरियाँ सिमटकर अत्यंत छोटी हो गई है। संप्रेषण के साधनों के विकास ने अन्य क्षेत्रों में वाणिज्यिक प्रगति को अपेक्षाकृत सरल बना दिया है। आज व्यापार से संबंधित कार्य संप्रेषण के साधनों के बदौलत घर या कार्यालय में बैठे-बैठे संपन्न किए जा सकते हैं। वर्तमान युग में अपने और संसार के प्रति लोगों की सोच, संस्कार, रीति रिवाजों और दृष्टिकोणों पर संप्रेषण माध्यमों के प्रभाव का इन्कार नहीं किया जा सकता। दिन प्रतिदिन लोगों पर सामूहिक संप्रेषण माध्यमों का प्रभाव पड़ रहा है उसमें टेलीविजन, मोबाइल और इंटरनेट को अग्रिम पंक्ति में रखा गया हैं। आज टेलीविजन इंटरनेट का ज्यादा से ज्यादा मानव द्वारा उपयोग हो रहा है, उसका किस तरह संप्रेषण के लिए उपयोग किया जाना है, यह मनुष्य पर निर्भय है।

तांबड़ा नरेश विष्णु
क्षेत्रीय केन्द्र, भुबनेश्वर

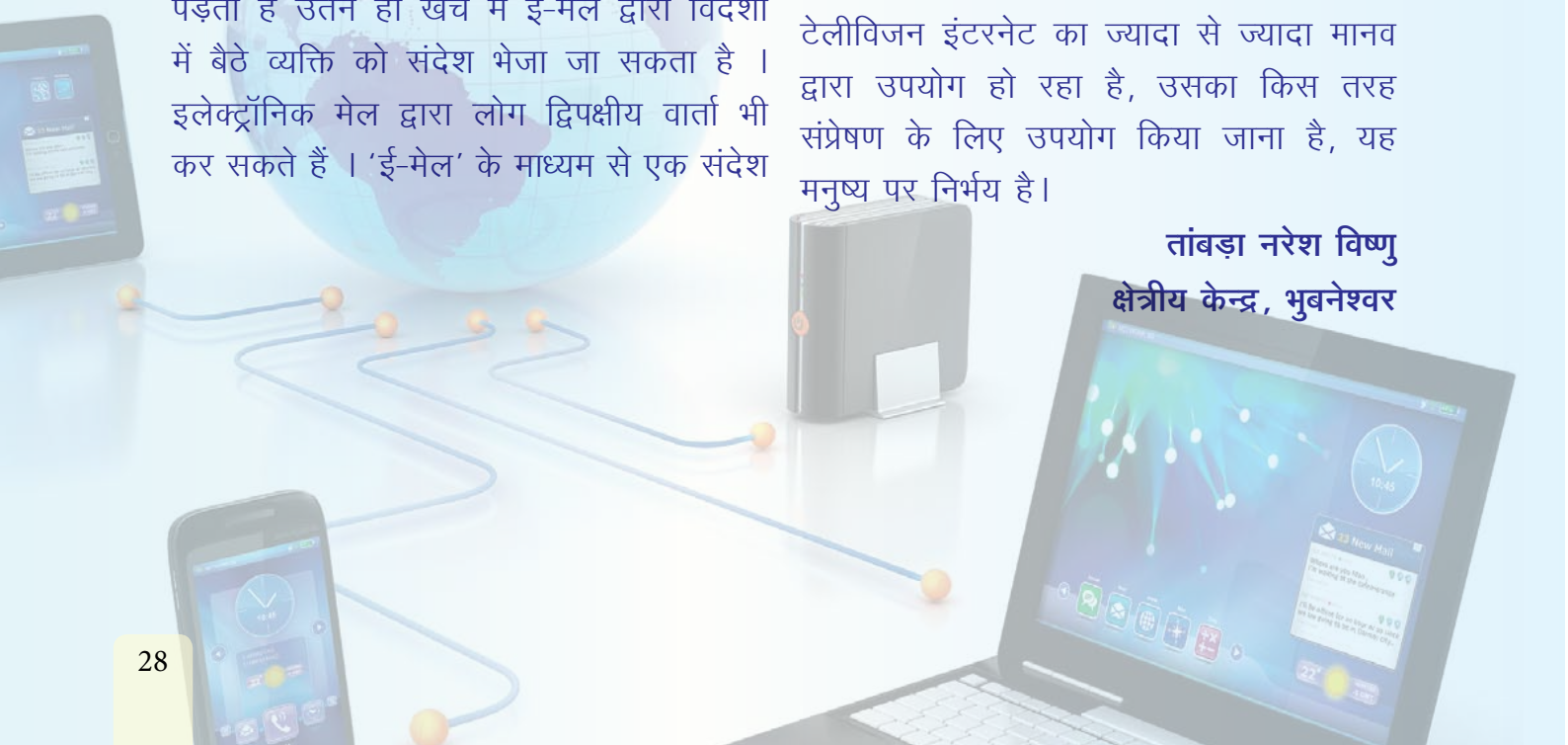

सुश्री रीता तेवतिया
माननीय सचिव, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के एमपीईडीए दौरे की झलक

सुश्री रीता तेवतिया
माननीय सचिव, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के एमपीईडीए दौरे की झलक

सुश्री रीता तेवतिया
माननीय सचिव, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के
एमपीईडीए दौरे की झलक

साहित्यकार कमलेश्वर

जीवन परिचय

'कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना' का जन्म उत्तर प्रदेश के मैनपुरी में 6 जनवरी, 1932 को हुआ था। प्रारम्भिक पढ़ाई के पश्चात् कमलेश्वर ने इलाहाबद विश्वविद्यालय से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। कमलेश्वर बहुआयामी रचनाकार थे। उन्होंने सम्पादन क्षेत्र में भी एक प्रतिमान स्थापित किया। 'नई कहानियों' के अलावा 'सारिका', 'कथा यात्रा', 'गंगा' आदि पत्रिकाओं का सम्पादन तो किया ही 'दैनिक भास्कर' के राजस्थान अलंकरणों के प्रधान सम्पादक भी रहे। कश्मीर एवं अयोध्या आदि पर वृत्त चित्रों तथा दूरदर्शन के लिए 'बन्द फ़ाइल' एवं 'जलता सवाल' जैसे सामाजिक सरोकारों के वृत्त चित्रों का भी लेखन-निर्देशन और निर्माण किया।

कार्यक्षेत्र

'विहान' जैसी पत्रिका का 1954 में संपादन आरंभ कर कमलेश्वर ने कई पत्रिकाओं का सफल संपादन किया जिनमें 'नई कहानियाँ'(1963-66), 'सारिका' (1967-78), 'कथायात्रा' (1978-79), 'गंगा' (1984-88) आदि प्रमुख हैं। इनके द्वारा संपादित अन्य पत्रिकाएँ हैं- 'इंगित' (1961-63) 'श्रीवर्षा' (1979-80)। हिंदी दैनिक 'दैनिक जागरण'(1990-92) के भी वे संपादक रहे। 'दैनिक भास्कर' से 1997 से वे लगातार जुड़े रहे। इस बीच जैन टीवी के समाचार प्रभाग का कार्यभार सम्हाला। सन 1980-82 तक कमलेश्वर दूरदर्शन के अतिरिक्त महानिदेशक भी रहे।

कमलेश्वर का नाम नई कहानी आंदोलन से जुड़े अगुआ कथाकारों में आता है। उनकी पहली कहानी 1948 में प्रकाशित हो चुकी थी परंतु 'राजा निरबंसिया' (1957) से वे रातों-रात एक बड़े कथाकार बन गए। कमलेश्वर ने तीन सौ से ऊपर कहानियाँ लिखी हैं। उनकी कहानियों में 'मांस का दरिया,' 'नीली झील', 'तलाश', 'बयान', 'नागमणि', 'अपना एकांत', 'आसक्ति', 'ज़िंदा मुर्दे', 'जॉर्ज पंचम की नाक', 'मुर्दों की दुनिया', 'क़सबे का आदमी' एवं 'स्मारक' आदि उल्लेखनीय हैं।

उन्होंने दर्जन भर उपन्यास भी लिखे हैं। इनमें 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ', 'डाक बंगला', 'तीसरा आदमी', 'समुद्र में खोया आदमी' और 'काली आँधी' प्रमुख हैं। 'काली आँधी' पर गुलज़ार द्वारा निर्मित' आँधी' नाम से बनी फ़िल्म ने अनेक पुरस्कार जीते। उनके अन्य उपन्यास हैं -'लौटे हुए मुसाफ़िर', 'वही बात', 'आगामी अतीत', 'सुबह-दोपहर शाम', 'रेगिस्तान', 'एक और चंद्रकांता' तथा 'कितने पाकिस्तान'। 'कितने पाकिस्तान' ऐतिहासिक उथल-पुथल की विचारोत्तेजक महा गाथा है।

कमलेश्वर की रचनाओं में तेजी से बदलते समाज का बहुत ही मार्मिक और संवेदनशील चित्रण दृष्टिगोचक रहा है। वर्तमान की महानगरीय सभ्यता

में मनुष्य के अकेलेपन की व्यथा और उसका चित्रांकन कमलेश्वर की रचनाओं की विशेषता रही है।

कमलेश्वर ने नाटक भी लिखे हैं। 'अधूरी आवाज़', 'रेत पर लिखे नाम', 'हिंदोस्ताँ हमारा' के अतिरिक्त बल नाटकों के चार संग्रह भी उन्होंने लिखे हैं।

आलोचना के क्षेत्र में उनकी 'नई कहानी की भूमिका' तथा 'मेरा पन्ना समानांतर सोच'(दो खंड) महत्वपूर्ण पुस्तकें समझी जाती है। उनके यात्रा विवरण 'खंडित यात्राएँ' और 'कश्मीरः रात के बाद' तथा संस्मरण 'जो मैंने जिया', 'यादों के चिराग़' तथा 'जलती हुई नदी' (1997) शीर्षक से प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने 'संकेत', 'नई धारा', 'मेरा हमदम मेरा दोस्त' इत्यादि हिंदी, मराठी, तेलगु, पंजाबी एवं उर्दू कथा संकलनों का भी संपादन किया।

फ़िल्म और टेलीविजन के लिए लेखन के क्षेत्र में भी कमलेश्वर को काफ़ी सफलता मिली है। उन्होंने सारा आकाश, आँधी, अमानुष और मौसम जैसी फ़िल्मों के अलावा 'मि. नटवरलाल', 'द बर्निंग ट्रेन', 'राम बलराम' जैसी फ़िल्मों सहित 99 हिंदी फ़िल्मों का लेखन किया।

कमलेश्वर भारतीय दूरदर्शन के पहले स्क्रिप्ट लेखक के रूप में भी जाने जाते हैं। उन्होंने टेलीविजन के लिए कई सफल धारावाहिक लिखे हैं जिनमें 'चंद्रकांता', 'युग', 'बेताल पचीसी', 'आकाश गंगा', 'रेत पर लिखे नाम' आदि प्रमुख हैं। भारतीय कथाओं पर आधारित पहला साहित्यिक सीरियल 'दर्पण' भी उन्होंने ही लिखा। दूरदर्शन पर साहित्यिक कार्यक्रम 'पत्रिका' की शुरुआत इन्हीं के द्वारा हुई तथा पहली टेलीफ़िल्म 'पंद्रह अगस्त' के निर्माण का श्रेय भी इन्हीं को जाता है। तकरीबन सात वर्षों तक दूरदर्शन पर चलने वाले 'परिक्रमा' में सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याओं पर खुली बहस चलाने की दिशा में साहसिक पहल भी कमलेश्वर जी की थी। वे स्वातंत्र्योत्तर भारत के सर्वाधिक क्रियाशील, विविधतापूर्ण और मेधावी हिंदी लेखक थे।

फ़िल्म एवं टेलीविजन

फ़िल्म और टेलीविजन के लिए लेखन के क्षेत्र में भी कमलेश्वर को काफ़ी सफलता मिली। उन्होंने सारा आकाश, आँधी, अमानुष और मौसम जैसी

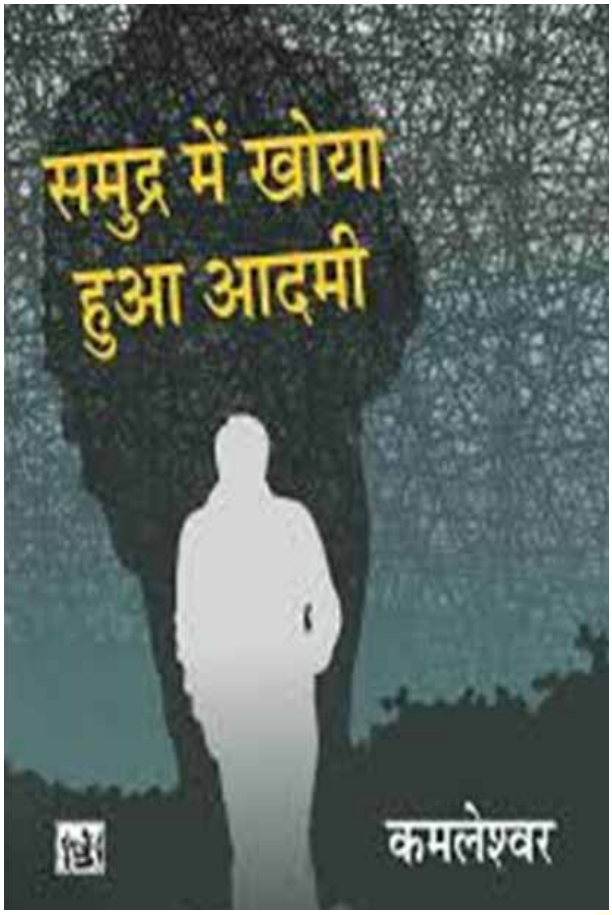

फ़िल्मों के अलावा 'मि. नटवरलाल', 'द बर्निंग ट्रेन', 'राम बलराम' जैसी फ़िल्मों सहित 99 हिंदी फ़िल्मों का लेखन किया। कमलेश्वर भारतीय दूरदर्शन के पहले स्क्रिप्ट लेखक के रूप में भी जाने जाते हैं। उन्होंने टेलीविजन के लिए कई सफल धारावाहिक लिखे हैं जिनमें 'चंद्रकांता', 'युग', 'बेताल पचीसी', 'आकाश गंगा', 'रेत पर लिखे नाम' आदि प्रमुख हैं। भारतीय कथाओं पर आधारित पहला साहित्यिक सीरियल 'दर्पण' भी उन्होंने ही लिखा। दूरदर्शन पर साहित्यिक कार्यक्रम 'पत्रिका' की शुरुआत इन्हीं के द्वारा हुई तथा पहली टेलीफ़िल्म 'पंद्रह अगस्त' के निर्माण का श्रेय भी इन्हीं को जाता है। तकरीबन सात वर्षों तक दूरदर्शन पर चलने वाले 'परिक्रमा' में सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याओं पर खुली बहस चलाने की दिशा में साहसिक पहल भी कमलेश्वर जी की थी। वे स्वातंत्र्योत्तर भारत के सर्वाधिक क्रियाशील, विविधतापूर्ण और मेधावी हिंदी लेखक थे।

प्रमुख रचनाएँ

कहानी संग्रह

- जॉर्ज पंचम की नाक
- मांस का दरिया
- इतने अच्छे दिन
- कोहरा
- कथा-प्रस्थान
- मेरी प्रिय कहानियाँ

आत्मपरक संस्मरण

- जो मैंने जिया
- यादों के चिराग़
- जलती हुई नदी

उपन्यास

- एक सड़क सत्तावन गलियाँ
- लौटे हुए मुसाफिर
- डाक बंगला
- समुद्र में खोया हुआ आदमी
- तीसरा आदमी
- काली आंधी
- वही बत
- आगामी अतीत
- सुबह....दोपहर....शाम
- रेगिस्तान
- कितने पाकिस्तान

प्रसिद्ध उपन्यासकार के रूप में 'कितने पाकिस्तान' ने इन्हें सर्वाधिक ख्याति प्रदान की और इन्हें एक कालजयी साहित्यकार बना दिया। हिन्दी में यह प्रथम उपन्यास है, जिसके अब तक पाँच वर्षों में, 2002 से 2008 तक ग्यारह संस्करण हो

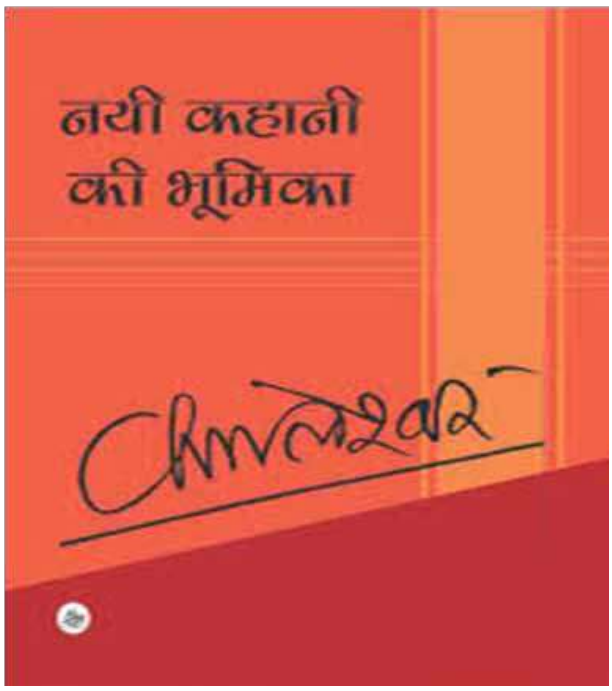

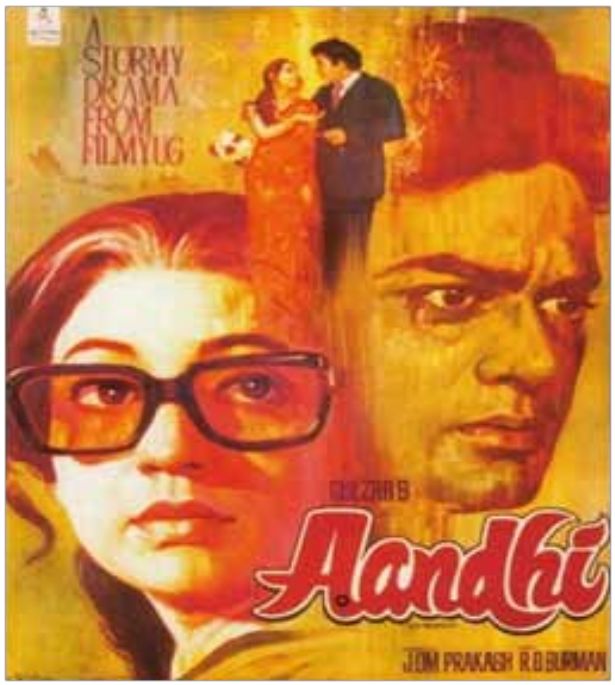

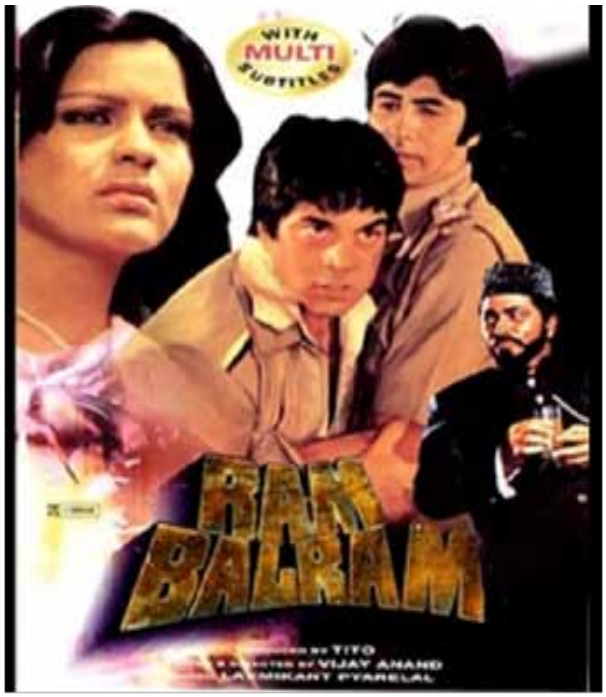

चुके हैं। पहला संस्करण छः महीने के अन्तर्गत समाप्त हो गया था। दूसरा संस्करण पाँच महीने के अन्तर्गत, तीसरा संस्करण चार महीने के अन्तर्गत। इस तरह हर कुछेक महीनों में इसके संस्करण होते रहे और समाप्त होते रहे।

सम्मान और पुरस्कार

कमलेश्वर को उनकी रचना धर्मिता के फलस्वरूप पर्याप्त सम्मान एवं पुरस्कार मिले। 2005 में उन्हें 'पद्म भूषण' अलंकरण से राष्ट्रपति महोदय ने विभूषित किया। उनकी पुस्तक 'कितने पाकिस्तान' पर साहित्य अकादमी ने उन्हें पुरस्कृत किया।

निधन

जनवरी 27 जनवरी, 2007 को फ़रीदाबाद, हरियाणा में कमलेश्वर का निधन हो गया।

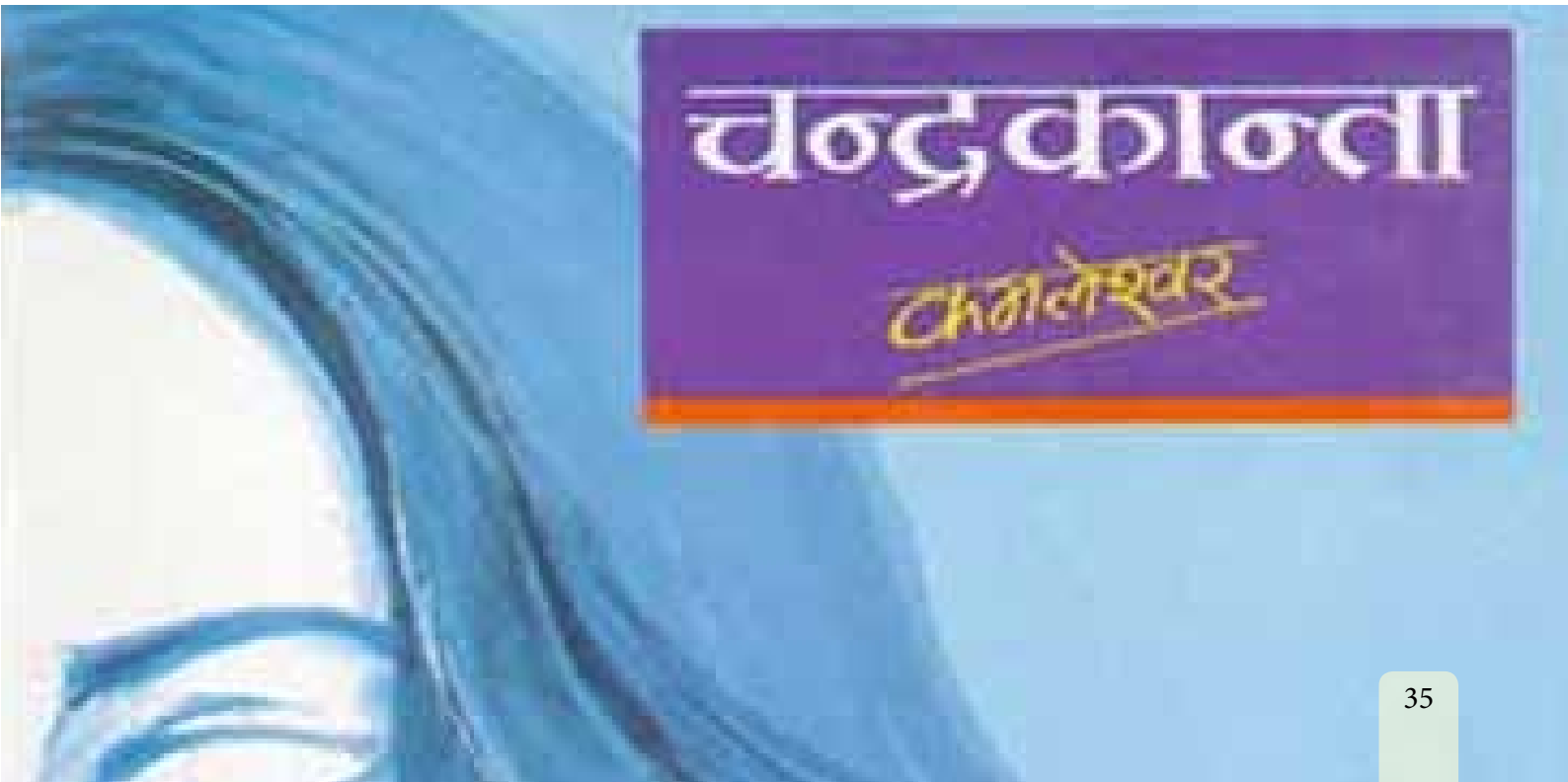

प्रदूषण एक समस्या

जैसे-जैसे मनुष्य ने वैज्ञानिक उन्नति की है उसने अपने भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए अनेक छोटे-बड़े कारखानों और उद्योगों का विकास किया है। जनवृद्धि के कारण ग्राम, नगर और महानगरों की बनावट को विस्तार देना आरंभ कर दिया है । जंगलों को काटकर बसने योग्य भूमि तैयार की जा रही है । उत्पादन और सुरक्षा के लिए ऐसी मशीनों का निर्माण कर लिया है जो रात-दिन ध्वनि और धुआँ उगलती रहती है । नदियों पर पुल बँध रहे हैं । परिवहन की सुविधा मिलने के कारण गाँव के लोग रोजगार की तलाश में नगरों और महानगरों में पलायन करने लगे हैं। यह संक्रमण, एक ओर तो देश को विकास प्रदान करता है पर दूसरी ओर जनस्वास्थ्य में गिरावट ला रहा है ।

इन सब से प्रकृति की स्वाभाविक क्रिया में असंतुलन पैदा होने लगा है। जंगलों के बेरोकटोक काटे जाने से जीवजन्तु समाप्त हो रहे हैं। कुछ प्रजातियाँ तो संख्या में अँगुलियों पर गिनने लायक रह गई हैं। प्रकृति का शोधक कारखाना शिथिल पढ़ गया है। हमारे चारों ओर प्रकृति का जो स्वस्थ आवरण है वह दोषपूर्ण हो चला है। इसी को पर्यावरण प्रदूषण की समस्या कहते हैं।

प्रदूषण की समस्या केवल भारत की ही नहीं पूरे जग की समस्या बनी हुई है। यह वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण के रूप में चारों तरफ अपना जाल फैलाती जा रही है। हम दूषित वातावरण में साँस ले रहे हैं। पीने के लिए स्वच्छ जल की कमी होती जा रही है। दूषित जल और जंतुनाशक दवाओं के कारण फसलें भी दूषित हो रही हैं। आधुनिक यंत्रो का शोर हमारी श्रवण शक्ति कमजोर बना रहे हैं।

वायु प्रदूषण फैलने का मुख्य कारण कारखानों की धुआँ उगलती हुई चिमनियाँ हैं जो दूर-दूर तक के वातावरण को दूषित कर रही हैं। जिससे साँस और फेफड़ों के रोग पनपते हैं, आँखें खराब हो जाती हैं । इसके अतिरिक्त वाहनों से निकलने वाला गन्दा धुआँ हमारे वातावरण को विषैला बनाता जा रहा है। कल- कारखानों का दूषित और अनियंत्रित मलजल बाहर निकलकर बदबूदार गैस फैलाता है। औद्योगिक संस्थानों से निकलने वाला रासायनिक कूड़ाकचरा तथा शहर की गटरों का पानी नदियों, झीलों तथा समुद्रों के पानी में विष घोल रहा है। रेलगाड़ियों, विमानों, वाहनों के हार्न, रेडियो, टेपरिकार्ड, दूरदर्शन, लाउडस्पीकरों से निकलने वाली ध्वनियाँ, ध्वनि प्रदूषण को बढ़ा रही हैं।

इस वातावरण में हम एक ओर तो प्रकृति के उपकरणों को बंदी बना रहे हैं। अतः इससे बचने के लिए प्राकृतिक और मानव निर्मित वातावरण में एक ऐसा तालमेल पैदा करना चाहिए जो प्रकृति के सुन्दर स्वरूप को भी खंडित न करे और मानव विकास की गुंजाइश भी बनी रहे। ग्रामीण जीवन की संपन्नता पर ही बड़े नगरों का जीवन निर्भर है। अतएव नगर की संस्कृति के साथसाथ ग्रामीण संस्कृति को भी प्रोत्साहन मिलना चाहिए । दूसरी ओर धुआँ, बदबू और मैल के रूप में विषैली रसायन निकालने वाले कारखानों को बस्तियों से दूर स्थापित किया जाना चाहिए । प्रत्येक नगर में चिकित्सा, शिक्षा, मलजल निष्कासन की उचित व्यवस्था होनी चहिए। अधिक से अधिक वृक्षारोपण करके इस समस्या को समाप्त तो नहीं लेकिन कम अवश्य किया जा सकता है ।

यदि मनुष्य सुख शान्ति से अपना जीवन निर्वाह करना चाहता है तो इस समस्या को दूर करना ही होगा । इसके लिए जनजीवन में जागरूकता उत्पन्न करनी होगी व जनसंख्या वृद्धि की दर को भी कम करना होगा, तभी प्रदूषण की समस्या से बचा जा सकता है ।

शशिकांत जी. पडवळ
उप क्षेत्रीय कार्यालय, मेंगलूर

हिंदी की व्यावहारिकता

मित्रों, चलिए फिर से एक बर हम कथनी के माध्यम से आपसे रुबरु होते हैं। कहते हैं असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो। राजभाषा हिंदी अभी भी सिर्फ कागजी उडान भर रही है । इसे गति देनी होगी क्योंकि गति के साथ ही प्रगति जुड़ी है। हमें हिंदी को स्वीकार करने में काफी साल लग गए है। अभी औपचारिकता से हटें और प्रभावी रूप से बदलाव के लिए तैयार रहें क्योंकि

प्रवचन नहीं वचन की आवश्यक है।

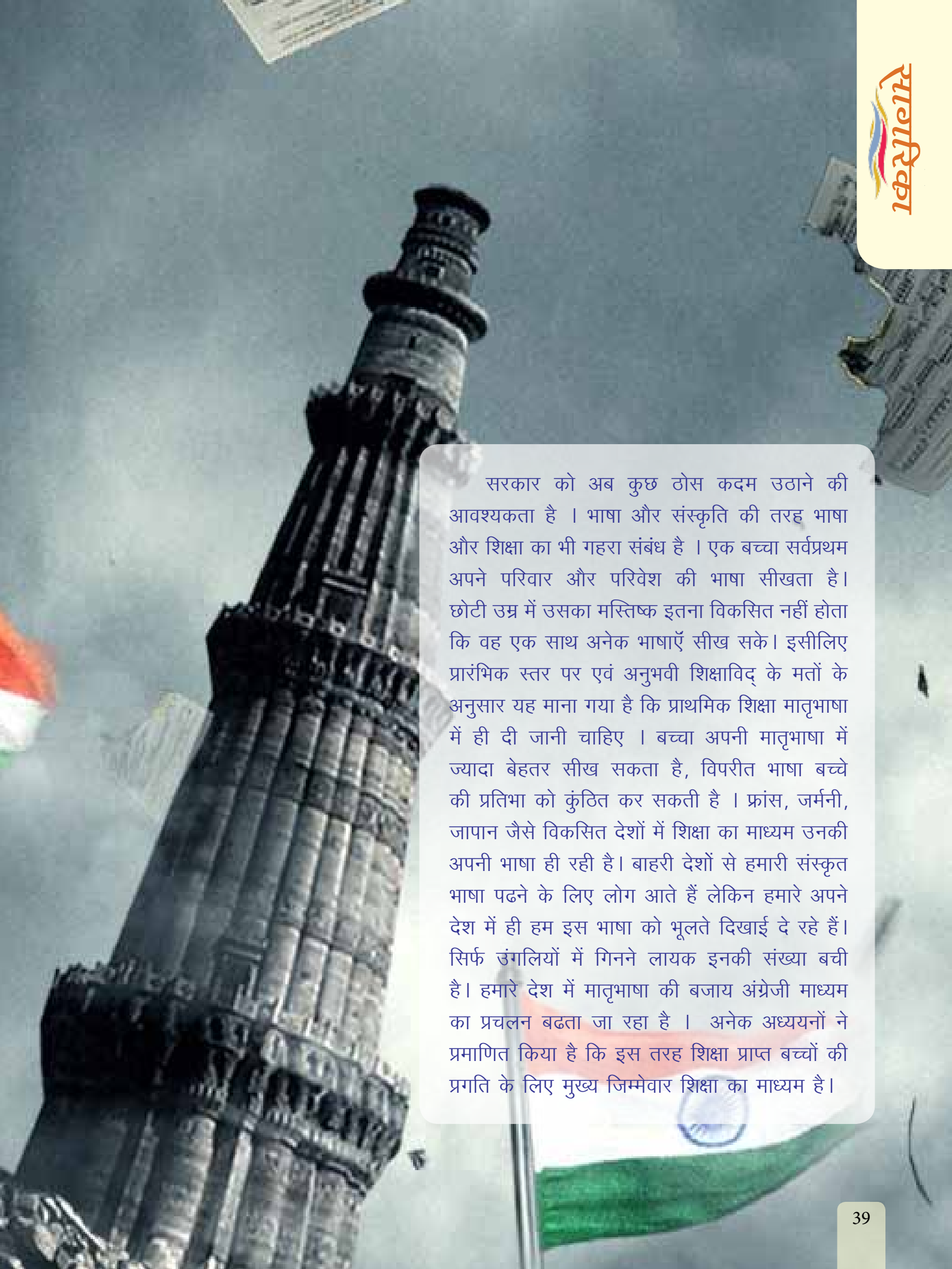

सरकार को अब कुछ ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है । भाषा और संस्कृति की तरह भाषा और शिक्षा का भी गहरा संबंध है । एक बच्चा सर्वप्रथम अपने परिवार और परिवेश की भाषा सीखता है। छोटी उम्र में उसका मस्तिष्क इतना विकसित नहीं होता कि वह एक साथ अनेक भाषाएँ सीख सके। इसीलिए प्रारंभिक स्तर पर एवं अनुभवी शिक्षाविद् के मतों के अनुसार यह माना गया है कि प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए । बच्चा अपनी मातृभाषा में ज्यादा बेहतर सीख सकता है, विपरीत भाषा बच्चे की प्रतिभा को कुंठित कर सकती है । फ्रांस, जर्मनी, जापान जैसे विकसित देशों में शिक्षा का माध्यम उनकी अपनी भाषा ही रही है। बाहरी देशों से हमारी संस्कृत भाषा पढने के लिए लोग आते हैं लेकिन हमारे अपने देश में ही हम इस भाषा को भूलते दिखाई दे रहे हैं। सिर्फ उंगलियों में गिनने लायक इनकी संख्या बची है। हमारे देश में मातृभाषा की बजाय अंग्रेजी माध्यम का प्रचलन बढता जा रहा है । अनेक अध्ययनों ने प्रमाणित किया है कि इस तरह शिक्षा प्राप्त बच्चों की प्रगति के लिए मुख्य जिम्मेवार शिक्षा का माध्यम है।

हमारे देश में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। हर भाषा को सीखना हरेक के लिए संभव नहीं है। इसीलिए संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस हुई । सर्वेक्षण के दौरान पाया गया है कि हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो बड़ी संख्या में बोली जाती है। जिसे बोलते हुए हर कोई आसानी महसूस करता है। यह भाषा लचीली होने के कारण इसे बोलते हुए किसी को शर्म नहीं बल्कि फख्र महसूस होता है। इस भाषा में सबको समा लेने की शक्ति है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक हिंदी भाषा संपर्क भाषा के रूप में उभरी है । वैसे तो हिंदी भाषा मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा आदि प्रदेशों में बोली जाती है, लेकिन इसके अतिरिक्त मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम आदि कई देशों में हिंदी व्यवहार की भाषा के रूप में विराजमान है। औपचारिक अवसरों, अन्तर देशीय एवं राष्ट्रीय कार्यक्रमों में हिंदी का प्रयोग जोरशोर से होता दिखाई देता है। वैसे तो हिंदी भाषा के प्रसार के लिए कई सरकार एवं सेमी सरकारी कार्यालय मौजूद हैं । जहाँ कामकाज की भाषा हिंदी ही है। हमारी फिल्मों का भी हिंदी को समृद्ध बनाने में बहुत बडा योगदान रहा है।

वर्तमान स्थिति में शिक्षा रोजगार, व्यापार व्यवसाय और ज्ञान-विज्ञान आदि क्षेत्रों में हिंदी का विकास सर्वोपरि दिखाई दे रहा है । अगर हमें देश को बदलना है तो पहले शिक्षा के माध्यम को बदलना होगा । और इसमें आने वाली हर समस्या का समाधान निकालना होगा । अगर हमारी भाषा पिछड़ी है तो इसका कारण सिर्फ यही है कि इसे अंग्रेजी की तुलना में विकसित होने का मौका नहीं दिया गया है । हमारे पूर्व प्रधानमंत्री अटल जी ने अपने वक्तव्य में कहा था एक बार अंग्रेजी को हटाकर हिंदी को उसकी जगह रखिए और फिर अपनी भाषा की प्रतिष्ठा देखिए ।

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के तहत सरकार चाहती है कि आम आदमी भी ऑनलाईन काम करने में आसानी महसूस करे और यह जानकारी उन्हें अपनी भाषा में देने के लिए कंप्यूटर और स्मार्ट फोन एक बहुत अहम भूमिका निभा रहे हैं । इसीलिए कंप्यूटर और स्मार्ट फोन पर हिंदी में जानकारी देने के लिए सरकार के भरसक प्रयत्न जारी हैं, और सरकार को इसमें सफलता भी हासिल हुई है। आज मोबाइल और कंप्यूटर में हिंदी की-बोर्ड की सुविधा देने का प्रावधान दिया गया है। अब वो दिन दूर नहीं,जब हिंदी का जादू लोगों के सिर चढ़कर बेलेगा।

हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए,

इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खडा करना मेरा मकसद नहीं,

सारी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

जय हिन्द ।

मृणालिनी प.आरेकर
क्षे.का.मुंबई

निर्मलजीत सिंह सेखों- वीरता की अमर कहानी

बहादुरी, भय का सामना करने में सक्षम होने का अति सराहनीय गुण है। बहादुरी ही एक शूरवीर को अपने से ताकतवर से मुक़ाबला करने की हिम्मत देती है । बहादुरी को साहस या वीरता भी कहा जा सकता है। अपनी या अपनों की रक्षा केलिए हम अपनी सारी ताकत लगा देते हैं । परंतु एक वीर सिपाही मातृभूमि और उन करोड़ों लोगों की रक्षा के लिए जिनसे उनका कोई रिश्ता नहीं होता, अपनी जान तक न्योछावर कर देता है। ऐसे जांबाज़, बहादुर सैनिकों की बहादुरी की कई अनकही कहानियाँ हैं। आज मैं एक ऐसी ही सबसे उत्कृष्ट, वास्तविक कहानी यहां पुनःप्रस्तुत कर रहा हूं ।

निर्मलजीत सिंह सेखों

सन् 1971 में भारत-पाक के बीच हुए युद्ध नायकों की जब भी बात की जाएगी तो उसमें फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों का नाम शीर्ष पर लिया जाएगा। सेखों ने युद्ध के दौरान पाकिस्तानी वायुसेना के जेट विमानों को भारतीय सीमा से मार भगाया था।

फ़्लाइंग ऑफ़िसर निर्मलजीत सिंह सेखों का जन्म 17 जुलाई 1947 को रूरका गाँव, लुधियाना, पंजाब में हुआ था। फौज में आने वाले अपने परिवार से वह अकेले नहीं थे बल्कि इस क्रम में वह दूसरे नम्बर पर थे। बस कुछ ही महीने पहले उनका विवाह हुआ था और उसमें भी निर्मलजीत सिंह ने पत्नी मंजीत के साथ बहुत थोड़ा सा समय बिताया था। नए जीवन के कितने सपने उनकी आँखों में रहे होंगे, जो देश की माँग के आगे छोटे पड़ गए।

14 दिसम्बर 1971 को श्रीनगर एयरफील्ड पर पाकिस्तान के छह सैबर जेट विमानों ने हमला किया था। सुरक्षा टुकड़ी की कमान संभालते हुए फ़्लाइंग ऑफ़िसर निर्मलजीत सिंह वहाँ पर 18 नेट स्क्वाड्रन के साथ तैनात थे। दुश्मन एफ़ -86 सैबर जेट विमानों के साथ आया था। उस समय निर्मलजीत के साथ

फ्लाइंग लैफ्टिनेंट घुम्मन भी कमर कस कर मौजूद थे। एयरफील्ड में एकदम सवेरे काफ़ी धुँध थी। सुबह 8 बजकर 2 मिनट पर चेतावनी मिली थी कि दुश्मन आक्रमण पर है। निर्मलसिंह तथा घुम्मन ने तुरंत अपनी उड़ान का संकेत दिया और उत्तर की प्रतीक्षा में दस सेकेण्ड के इंतज़ार के बाद उत्तर न मिलनेपर उड़ान का निर्णय लिया। ठीक 8 बजकर 4 मिनट पर दोनों वायु सेना-अधिकारी दुश्मन का सामना करने के लिए आसमान में थे। उस समय दुश्मन का पहला एफ़ -86 सैबर जेट एयर फील्ड पर गोता लगाने की तैयारी कर रहा था। एयर फील्ड से पहले घुम्मन के जहाज ने रन वे छोड़ा था। उसके बाद जैसे ही निर्मलजीत सिंह का जेट उड़ा, रन वे पर उनके ठीक पीछे एक बम आकर गिरा। घुम्मन उस समय खुद एक सैबर जेट का पीछा कर रहे थे। सेखों ने हवा में आकर दो सेबर जेट विमानों का सामना किया, इनमें से एक जहाज वही था, जिसने एयरफील्ड पर बम गिराया था। बम गिरने के बाद एयर फील्ड से कॉम्बैट एयर पेट्रोल का सम्पर्क सेखों तथा घुम्मन से टूट गया था। सारी एयरफील्ड धुएँ और धूल से भर गई थी, जो उस बम विस्फोट का परिणाम थी। इस सबके कारण दूर तक देख पाना कठिन था। तभी फ्लाइट कमाण्डर स्क्वाड्रन लीडर पठानिया को नजर आया कि कोई दो हवाई जहाज मुठभेड़ की तैयारी में हैं। घुम्मन ने भी इस बात की कोशिश की, कि वह निर्मलजीत सिंह की मदद के लिए वहाँ पहुँच सकें लेकिन यह सम्भव नहीं हो सका। तभी रेडियो संप्रेषण व्यवस्था से निर्मलजीत सिंह की आवाज़ सुनाई पड़ी...

'मैं दो सैबर जेट जहाजों के पीछे हूँ...मैं उन्हें जाने नहीं दूँगा...'

उसके कुछ ही क्षण बाद जेट से आक्रमण की आवाज़ आसमान में गूँजी और एक सेबर जेट आग में जलता हुआ गिरता नजर आया। तभी निर्मलजीत सिंह सेखों ने अपना सन्देश प्रसारित किया:

'मैं मुकाबले पर हूँ और मुझे मजा आ रहा है। मेरे इर्द-गिर्द दुश्मन के दो सैबर जेट हैं। मैं एक का ही पीछा कर रहा हूँ, दूसरा मेरे साथ-साथ चल रहा है।'

इस सन्देश के जवाब में स्क्वेड्रन लीडर पठानिया ने निर्मलजीत सिंह को कुछ सुरक्षा सम्बन्धी हिदायत दी, जिसे उन्होंने पहले ही पूरा कर लिया था। इसके बाद जेट से एक और धमाका हुआ जिसके साथ दुश्मन

के सैबर जेट के ध्वस्त होने की आवाज़ भी आई। अभी निर्मलजीत सिंह को कुछ और भी करना बाकी था, उनका निशाना फिर लगा और एक बड़े धमाके के साथ दूसरा सैबर जेट भी ढेर हो गया। कुछ देर की शांति के बाद फ्लाइंग ऑफिसर निर्मलजीत सिंह सेखों का सन्देश फिर सुना गया। उन्होंने कहा-

'शायद मेरा जेट भी निशाने पर आ गया है... घुम्मन, अब तुम मोर्चा संभालो।'

यह निर्मलजीत सिंह का अंतिम सन्देश था। पाक के तीन लड़ाकू विमानों को उन्होंने ध्वस्त किया तथा अपना काम पूरा करके वह वीरगति को प्राप्त हो गए।

सेखों की वीरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि दुश्मन देश भी उनकी प्रशंसा करने से अपने आप को रोक नहीं पाता है। हमारा पड़ोसी देश पाकिस्तान भी उनकी बहादुरी का कायल था। पाकिस्तान के एक शीर्ष अधिकारी ने अपनी किताब में सेखों की बहादुरी की चर्चा करते हुए उनके बलिदान को खूब सराहा था। युद्ध के दौरान सेखों ने न सिर्फ दुश्मनों के 3 सेबर जेट विमानों को अपने हमले का निशाना बनाया बल्कि पाकिस्तानी वायुसेना को उलटे पैर भागने पर मजबूर भी कर दिया था।

युद्ध में देश की रक्षा करते हुए 14 दिसंबर को सेखों शहीद हो गए थे। उनकी वीरता को देखते हुए 26 जनवरी 1972 को राष्ट्रपति वीवी गिरी ने सेखों को मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया। परमवीर चक्र वीरता के लिए दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है।

निर्मलजीत सिंह सेखों इंडियन एयरफोर्स के एकमात्र परमवीर चक्र विजेता है।

सेखों, देश आपको सलाम करता है!

कहानी योगदान - श्री के वी प्रसन्नकुमार
एमपीईडीए, मुख्यालय

युवा पीढ़ी

आगे किसने क्या देखा है अथवा सब ज्ञान-ध्यान बुढ़ापे में , वाली विचारधारा को अपनाते नजर आते है वो यह भूल जाते है कि इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि बचपन के बाद जवानी आएगी कि नहीं और जवानी के बाद बुढ़ापा आएगा कि नहीं क्योंकि जीवन तो क्षणभंगुर है, न जाने कब स्वासों की लड़ी टूट जाए। इसके बीतने का कुछ पता नहीं चलता है।

सुबह को बचपन हँसते देखा, दोपहर को मस्त जवानी।
शाम बुढ़ापा ढलते देखा, रात को खत्म कहानी।

जीवन के हर पहलू की कीमत है। बचपन अगर संभल जाए तो जवानी भी संभल जाएगी, जवानी अगर संभल गई तो बुढ़ापा भी संभल जाएगा। आदि,मध्य और अंत तीनों का सही होना जरूरी है। अक्सर कहा जाता है कि बचपन का खाया जवानी मे काम आता है और जवानी का खाया बुढ़ापे में। यहाँ भी यह बात लागू होती है कि बचपन अगर सुसंगत में बीता तो जवानी बहकने-भटकने से बच जाएगी, जवानी

में अगर सुमति बनी रही तो बुढ़ापा निश्चय ही सही दिशा वाला होगा। एक कड़ी दूसरी कड़ी के साथ जुड़ी हुई है। विवेक शौक जी का वो शेर यहां एक दम सटीक साबित होता है कि -

मजा जब है 'विवेक' अपनी जवानी में सुधर जाए,
वरना बुढ़ापे में सुधर जाना कोई मुश्किल नहीं होता।

बुढ़ापा आते-आते तक तो इंसान अपने अच्छे-बुरे अनुभवों के चलते काफी हद तक यूं ही सुधर जाता है,

तभी तो बुजुर्गो से अक्सर यह कहते हुए सुना जाता है कि हमने कोई धूप में बाल सफेद थोड़े ही किए है।

प्रश्न यह है कि बचपन में अगर चूक गए तो जवानी को कैसे बचाएं, इसे भटकन की दिशा में जाने से कैसे रोकें। इसमें रूहनीयत कैसे लाएँ, इसे नूरानी कैसे बनाएं ? इसमे रूपान्तरण कैसे करें ? ऐसा भी नहीं है कि इसकी शक्ति को दबाना है, इसके जोश को मिटाना है, या इसकी ऊर्जा को नष्ट करना है ऐसा नहीं करना है, बस इसका रूपान्तरण करना है। इसे न मिटाना है, न दबाना है, न नष्ट करना है; बल्कि इसकी दिशा को बदलना है जैसे कि दरिया का पानी जब आप मुहारा हो जाता है, दिशा हीन हो जाता है तब यह सब तरफ से तबाही करता आ रहा होता है। यदि उसको नियंत्रित करके उस पर बांध बना दिया जाए तो वो हमारे अनेकों काम आता है, उससे बिजली का उत्पादन होता है, उससे नहरें निकाली जाती है और भी तरह-तरह के उपयोगी साधन जुटाये जाते हैं। ठीक इसी प्रकार युवा शक्ति जो दिशाहीन नजर आ रही होती है, बहकी-भटकी हुई प्रतीत हो रही होती है उसको दबने, मिटाने व उस पर अंकुश लग-ाने की बजाय उसे रूपांतरित कर दिया जाए, उसे सही दिशा दे दी जाए, उसे परमार्थ में लगा दिया जाए तो उसका यह सदुपयोग होगा। इसका परिणाम यह होता है की जो हाथ- पांव किसी को गिरने के लिए उठते थे, अब वो गिरते को उठाने के लिए उठते हैं, जो बोल किसी को चोट पहुंचाते थे, किसी का दिल दुःखाते थे, अब वो मरहम लगाने का काम करते हैं। जो सोच सदा बुरा सोचती थी, अब वो भला सोचती है। यह सारा बदलाव, यह रूपान्तरण किसी क्रांति से कम नहीं। पर यह क्रांति घटि त तब होती है जब इसका पथ प्रदर्शक परिपक्व हो, कोई राहजन, राहगीर न होकर कामिल मुरशिद, रहबर ई रहनुमा हो जिसके सान्निध्य में आने से सब कुछ संवर जाए। हाव-भाव, चाल-ढाल, वृत्ति-श्रुति, बेली-भाषा, दृष्टि आदि सब बदल जाए। जिस-जिस ने भी ऐसे कर्मयोगी महात्मा का दामन थामा है, उसकी शरण ली है, उसके दिल की गहराइयों से यही बोल निकलते है, कि -

मैंने देखा है जीवन की कहानी बदल जाती है, बुढ़ापे बदल जाते हैं, जवानी बदल जाती है।

ये निशाना जिस बेनिशाने को दे दे मुरशीद,
आदत बंदगी की कुल पुरानी बदल जाती है।

नामदेव आर भोईनकर
एमपीईडीए, सैटेलाइट सेंटर,
रत्नागिरी

भारत में जैव जलकृषि विकास - समस्याएं और संभावनाएं

जी गोपकुमार
एमपीईडीए, एसआरसी बालासोर, ओड़िशा

जैविक शब्द प्राकृतिक, अपरिष्कृत और ऑमैक्राबायोटिक का पर्याय है। प्राकृतिक रूप से उत्पादित सभी उत्पाद निस्संदेह जैविक होते हैं चाहे वह कृषि हो या जलकृषि, बागवानी या पशु चिकित्सा हो। यहां हम जलकृषि उत्पादों के बारे में चर्चा कर रहे हैं. खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) के अनुसार, जलकृषि को 'मत्स्य, मोलस्कस, क्रस्टेशियंस और जलीय पौधों सहित जलीय जीवों की कृषि समझा जाता है'। खेती में उत्पादन को बढ़ाने के लिए पालन-पोषण की प्रक्रिया में नियमित रूप से संग्रहण, चारा देना, परभक्षी से सुरक्षा आदि भी अंतर्निहित होता है। खेती में, खेती किए जा रहे स्टॉक के व्यक्तिगत या कॉर्पोरेट स्वामित्व का भी अर्थ निहित है।

भारत में, केरल में पोक्काली क्षेत्र, पश्चिम बंगाल के भेरीज़, उड़ीसा के घेरीस, कर्नाटक में गज़नी और गोवा में खजार भूमि पारंपरिक कृषि क्षेत्रों के रूप में दर्शाये जाते हैं । वास्तव में ये क्षेत्र या तो धान की खेती वाले क्षेत्र हैं या निचले क्षेत्र हैं जो खारा पानी से भरा हुआ है जो ज्वारीय प्रभाव के साथ खाड़ी तक पहुंच रहा है। इन क्षेत्रों में अमल में लाई जाने वाली प्रक्रिया एक पुरानी मत्स्यन प्रक्रिया है । ज्वारीय जल के साथ विभिन्न प्रजातियों के मत्स्य और श्रिम्प इन निचले क्षेत्रों में आते हैं, जो पानी के प्रवेश और बाहर निकलने के लिए स्थान को छोड़कर शेष पूरा भाग मिट ्टी के बांध से संरक्षित होता है। प्रवेश बिंदु पर बांस का स्क्रीन लगाया जाता है जो उच्च ज्वार के पानी के भीतर प्रवेश करने पर इंपौंडमेंट (बड़े) में खुलता है । कम ज्वार के दौरान जब पानी निकल जाता है तो स्क्रीन स्वयं बंद हो जाता है । अंदर फंसे सभी मत्स्यों को इकट्ठा करके भोजन के रूप में उपयोग किया जाता है। समय के बढ़ने के साथ ही प्रोटीन स्रोत की आवश्यकता भी बढ़ गई, अतः जो लोग इस कार्यकलाप में लगे हुए हैं उन्होंने उसे उसी दिन इकट्ठा करने की बजाय, कुछ और दिनों तक बढ़ने दिया और बाद में उनकी पैदावार ली। यह कार्यकलाप युगों तक जारी रखा गया और आज भी उपर्युक्त राज्यों में जारी है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी और मानवविज्ञान की प्रगति के साथ कई बदलाव किए गए और इसे "पारंपरिक कृषि प्रौद्योगिकी" नामक तकनीक के रूप में विकसित किया । यहां पर श्रिम्प पानी और मिट्टी में उपलब्ध प्राकृतिक भोजन पर जीवित रहते. बायोमास भी बहुत कम है और उत्पादकता 500 से 1000 किलोग्राम प्रति हे. है । इन क्षेत्रों से आने वाले उत्पाद वास्तव में प्राकृतिक हैं, इसलिए जैव हैं ।

लेकिन बाजार के संदर्भ में जैव अर्थ बिल्कुल अलग है। एक उत्पाद को जैविक के रूप में लेबल करने के लिए सिद्धांत, मानदंड, प्रोटोकॉल और प्रमाणीकरण होते हैं। एक आम आदमी इसे समझ नहीं सकता है। लेकिन विश्व बाजार में जैव उत्पादों की भारी मांग है। वर्तमान परिदृश्य

में यह बहुत ही मायने रखता है। अब उत्पादकता और लाभप्रदता में सुधार करने के लिए लोग विभिन्न रसायनों, कीटनाशकों, पीड़कनाशियों, एंटीबयोटिक दवाओं का प्रयोग अविचारपूर्वक रोगनिरोधी और चिकित्सीय रूप करते हैं। स्थिति अब खतरनाक है और भारत और विदेशों में आम जनता स्वास्थ्य के प्रति जागरूक है और इसने

एक जैव जलकृषि फार्म का दृश्य

उन्हें जैविक उत्पादों के स्रोत का पता लगाने पर मजबूर किया है। यूरोपीय देशों में जैविक उत्पाद के प्रति रुझान ज्यादा है और वे प्रीमियम मूल्य देने के लिए भी तैयार हैं।

इतिहास और मील का पत्थर

जैव उत्पादों के लिए बढ़ते बाजार को देखते हुए समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) ने देश में जैव जलकृषि को बढ़ावा देने के लिए एक योजना शुरू की है। यह योजना प्रमाणित हितधारकों जैसे कि (1) प्रमाणित जैव श्रिम्प/ स्कैम्पी हैचरियों (2) प्रमाणित जैव चारा मिल (3) प्रमाणित जैव श्रिम्प/ स्कैम्पी फ़ार्मों और (4) प्रमाणित जैव समुद्री खाद्य प्रसंस्करणकर्ताओं को विकसित करने में सफल रही थी । कोचीन, कोलकाता और विजयवाड़ा में जैव श्रिम्प कृषि पर एक कार्यशाला अप्रैल और जून 2005 को आयोजित की गई थी। तदुपरान्त अप्रैल 2006 में फ़ील्ड सर्वे, परियोजना साझेदारों और पायलट क्षेत्रों का चयन किया गया । वर्ष 2007 में एमपीईडीए और स्विस सरकार के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया था।

स्कैम्पी के लिए परियोजनाओं का कार्यान्वयन, केरल में भारतीय सफेद झींगा और आंध्र प्रदेश में ब्लैक टाइगर झींगा ।

माक्रेब्राचियम रोसेनबेर्गी (स्कैम्पी)

पीनियस मोनोडोन (ब्लैक टाइगर श्रिम्प)

पीनियस मोनोडोन (इंडियन व्हाइट श्रिम्प)

विश्व में ताजे पानी के भीमकाय झींगे, स्कैम्पी का पहला जैविक जलकृषि संग्रहण, 1 नवंबर, 2007 में केरल के कुट्टनाड में, समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) द्वारा आर्थिक राज्य सचिवालय (एसईसीओ), स्विट ज़रलैंड के सहयोग से किया गया था। इसके बाद, एमपीएडीए ने वर्ष 2011 और 2012 के दौरान मेसर्स डब्लूएबी ट्रेडिंग इंटरनेशनल, हांगकांग के सहयोग से पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश और केरल में जैव श्रिम्प कृषि की शुरूआत की । संप्रति, मैसर्स जास्स वेंचर्स प्राइवेट लिमिट ड नामक एक जैव आईसीएस प्रोमोशन बॅडी की सहायता के साथ केरल राज्य में एक और नया जैव आईसीएस तैयार किया गया था। केरल राज्य में जैव जलकृषि कार्यकलापों में प्रगति हो

रही है और भविष्य के विकास के लिए राज्यों में पाडशेखरम जैसे संभावित संसाधनों को लक्षित किया जा रहा है। प्राकृतिक संसाधनों का इष्ट तम उपयोग करने में पाडशेखरम में जैव जलकृषि का विकास सहायता कर सकता है। राज्य के पाडशेखरम में जैव जलकृषि की पायलट स्तर की शुरुआत ने सकारात्मक परिणाम दिखाया है।

जैव जलकृषि के सिद्धांत

एक जैव लेबल उपभोक्ता को सूचित करता है कि उत्पाद का उत्पादन जैविक उत्पादन विधियों के सिद्धांतों के तहत किया गया है। वास्तव में, जैव एक उत्पाद दावे के बजाय प्रक्रिया दावा है। इसलिए, जैव कृषि में उत्पादन विधि और प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण हैं। यहां तक कि अगर किसी उत्पाद को जैव प्रथाओं के तहत उत्पादित किया जाता है, तो भी उपभोक्ता का विश्वास केवल तभी प्राप्त होता है जब उस पर किसी प्रतिष्ठित तृतीय पार्टी के प्रमाणीकरण की गारंटी होती है एवं जो आवश्यक दस्तावेज़ों द्वारा समर्थित होता है। यह प्रमाणन निकायों की सेवाओं के माध्यम से प्राप्त किया जाता है । इन प्रमाणीकरण निकायों ने उत्पादन, प्रसंस्करण और जैव उत्पाद बनाने के लिए अपने जैव मानकों को तैयार किया है। इन मानकों के अनुपालन पर, प्रमाणीकरण निकाय प्रमाणपत्र जारी करते हैं और उत्पादों पर अपने लोगो को लगाने की अनुमति देते हैं। यह लोगो जैव उपभोक्ताओं के लिए अंतिम गारंट ी और विश्वास का प्रतीक है। जैव प्रमाणीकरण निम्नलिखित सुनिश्चित करता है,

- जैव जलकृषि फ़ार्मों के लिए स्थान का सावधानीपूर्वक चयन
- समीपवर्ती पारिस्थितिक तंत्र का संरक्षण
- जलीय संसाधनों के अन्य प्रयोक्ताओं (जैसे मछुआरे) के साथ संघर्ष के सक्रिय परिहार
- रसायनों की पाबंदी
- बीमारी के मामले में प्राकृतिक उपचार और उपाय
- जैवकृषि से चारा सामग्री .
- मानव उपभोग के लिए संसाधित मत्स्य के उप-उत्पादों से प्राप्त चारा में मत्स्य चारा और मत्स्य तेल (कोई समर्पित "चारा मात्स्यिकी" नहीं)
- चारा सामग्री एवं स्टॉक में आनुवंशिक रूप से उन्नत जीवों (जीएमओ) की पाबंदी
- जैव मानकों के अनुसार प्रसंस्करण

जैव जलकृषि मानक :

प्रमाणीकरण यह सत्यापित करने की एक प्रक्रिया है कि कोई उत्पाद या प्रक्रिया निर्धारित जैव मानकों के अनुरूप है या नहीं। जैव प्रमाणीकरण में दिए गए उपायों में जानकारी का आदान-प्रदान, मूल्यांकन पूर्व का दौरा, निरीक्षण, प्रमाणन, अनुबंध और प्रमाण पत्र जारी करना शामिल है। समुद्री खाद्य उत्पादन के लिए जैव मानक अलग-अलग देशों में भिन्न हो सकते हैं, हालांकि पर्यावरण के दृष्टिकोण, सामाजिक दायित्वों और आर्थिक विचारों के साथ बुनियादी मानदंड समान ही रहते हैं।. इनमें से, नीदरलैंड, जर्मनी और जैव स्युस्से, स्विट्जरलैंड के मानदंडों का पालन कुछ भारतीय जैव जलीय कृषि इकाइयों द्वारा किया जाता है। भारत में इन्डोसर्ट, आल्वे, केरल और आईएमओ बेंगलूर, कर्नाटक जैसी निरीक्षण एजेंसियां संप्रति

यूरोपीय संघ के मानदंडों के तहत जैव जलकृषि इकाइयों को प्रमाणित कर रहे हैं। कभी-कभी, प्रमाणित जैव स्थिति प्रदान करने से पहले प्रमाणित निकायों द्वारा नए खेतों केलिए रूपांतरण योजनाओं की सलाह दी जाती है।

भारत में, जैविक कृषि के मानकों को कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीईडीए) द्वारा राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम (एनपीओपी) के तहत निर्धारित

किया गया है। एनपीओपी के तहत देश में जैव जलकृषि के लिए प्राधिकरण ने पहल की है और मानकों का विकास किया है।

जलकृषि संस्थाओं के मानक लगातार संशोधित किए जा रहे हैं और प्रमाणन निकायों द्वारा लगातार अद्यतन किए जा रहे हैं।अतः, जैव जलकृषि उत्पादन और प्रसंस्करण के लिए सामान्य मानकों का ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है ।

हैचरी केलिए मानक - जैव बीज उत्पादन

- प्रजातियां - स्वाभाविक रूप से इस क्षेत्र में होने वाली, पसंदीदा
- पालन किए जाने वाले जैव उत्पादन प्रोट ोकॉल
- होर्मोनों का उपयोग करने की अनुमति नहीं है
- जैव प्रबंधन के तहत रखने के बाद वाइल्ड ब्रूडर का इस्तेमाल किया जा सकता है
- कृत्रिम रोशनी - कृत्रिम दिन का दैर्ध्य16 घंटे से अधिक नहीं होनी चाहिए
- वातन, कृत्रिम प्रकाश जितना संभव हो उतना कम होना चाहिए

चारा मिल के लिए मानक - जैविक खाद्य उत्पादन

- उत्पादन की पूरी प्रक्रिया के माध्यम से अलग उत्पाद प्रवाह
- कृषि मूल की सभी सामग्रियों को प्रमाणित किया जाना है
- पेय जल स्तर का बनाने की प्रक्रिया के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला पानी
- पार संदूषण के खिलाफ निवारक उपाय
- चिरस्थाई मात्स्यिकी से मत्स्य आहार/ तेल या प्रसंस्करण कारखानों से ऑफ-कट
- उत्पादन के लिए कोई जीएमओ सामग्री की अनुमति नहीं है
- रोगाणुरोधी वृद्धि संवर्धक सर्वथा निषिद्ध
- संपूर्ण अनुमार्गणीयता और सख्त खाद्य सुरक्षा

अक्वा फार्मों के लिए मानक - जैव कृषि

- साइट की स्थितियों के आधार पर रूपांतरण योजना तैयार की जानी चाहिए
- स्थानीय रूप से निर्मित पोषक तत्वों / जैव उर्वरकों से उर्वरीकरण
- कृषि क्षेत्र में संश्लेषित जड़ी बूटियों और कीटनाशकों की अनुमति नहीं है
- जंगली बीज संग्रहण की अनुमति नहीं है, और बीज जैव हेचरी से प्राप्त किया जाना है
- प्रमाणित जैव चारे के साथ चारा देना
- एंटीबयोटिक दवाओं, कीमोथेरापिटिक्स और तुलनीय पदार्थों का उपयोग निषिद्ध है
- न्यूनतम संभाव्य जल विनिमय और ऊर्जा की खपत में कमी
- जानवरों की स्वास्थ्य स्थिति की निगरानी और नियमित आधार पर प्रलेखन
- फार्म दस्तावेजों / डेयरी का अनुरक्षण
- बहिस्राव पानी की गुणवत्ता का निरीक्षण किया जाना चाहिए
- पैदावार के चिल्ल किल्लिंग का पालन किया जाना चाहिए
- गुणवत्ता वाले बर्फ और पैकेजिंग बक्से की खरीद
- जैव और पारंपरिक कृषि पद्धति के बीच बदलाव की अनुमति नहीं है

प्रसंस्करण संयंत्रों के लिए मानक - जैव प्रसंस्करण

- प्रसंस्करण में जैव सिद्धांतों का पालन किया जाना है
- परंपरागत उत्पादों के साथ कोई पार संदूषण नहीं होना चाहिए
- पेय जल स्तर का बनाने की प्रक्रिया के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला पानी
- स्वादिष्ट एजेंट / एंजाइम
- खनिज पोषक तत्वों, ट्रेस तत्वों और विटामिन का प्रयोग निषिद्ध है सोडियम मेटा बयसल्फेट, फॉस्फेट और कार्बन मोनोऑक्साइड का प्रयोग निषिद्ध है
- माइक्रोवेव या आयनिंग रे के साथ उपचार निषिद्ध है
- पैकेजिंग का उत्पादन पर्यावरण के अनुकूल होना चाहिए
- क्लोरीन, धातु या एल्यूमीनियम युक्त पैकेजिंग सामग्री का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए
- पैकिंग के लिए जैव प्लास्टिक का उपयोग करने की सलाह दी जाती है
- हानिकारक सॉल्वेंट्स न होने वाले मुद्रण रंग चुने जाने हैं ।
- पैकेजिंग की विकिरण (विद्युत या आयनीकरण) निषिद्ध हैं
- ऑपरेटर को उचित दस्तावेज़ रखना है
- आयोडीनयुक्त नमक का उपयोग स्पष्ट रूप से लेबल किया जाना चाहिए

कुछ जैव प्रमाणन संगठन

विभिन्न प्रकार के जैव प्रमाणीकरण हैं, जो निम्नानुसार हैं

अ) किसानों का एक समूह एक आईसीएस स्थापित करता है और दल के किसानों से अपने प्रमाणित उत्पाद के लिए संयुक्त खरीद और विपणन का आयोजन भी करता है। दल के पास एकल प्रमाणपत्र होता है

आ)एक प्रसंस्करणकर्ता और /या निर्यातक, कंपनी के लिए प्रमाणित श्रिम्प का उत्पादन करने के लिए छोटे किसानों को अनुबंधित करता

है। प्रसंस्करणकर्ता या निर्यातक आईसीएस ऑपरेटर है और सभी आंतरिक नियंत्रण प्रक्रियाओं का आयोजन करता है। प्रमाणपत्र कंपनी का होता है।

इ) एक वैयक्तिक बड़ा किसान जो प्रमाणन एजेंसी के मानकों का पालन करता है और मानकों के अनुपालन और निरीक्षण रिपोर्ट के अनुसार, प्रमाणपत्र उस व्यक्ति के नाम पर जारी किया जाता है (एकल प्रमाणीकरण)

आंतरिक नियंत्रण प्रणाली (आईसीएस) एक दस्तावेजी गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली है जो एक बाहरी प्रमाणीकरण निकाय को वैयक्तिक दल सदस्यों का वार्षिक निरीक्षण, किसी प्रमाणित ऑपरेटर के भीतर एक अभिज्ञप्त निकाय / इकाई को सौपने की अनुमति देता है ।

यह इंगित करता है कि एक उत्पादक समूह मूल रूप से सभी किसानों को परिभाषित प्रक्रियाओं के अनुसार जैव उत्पादन नियमों के अनुपालन के लिए नियंत्रित करता है। जैव प्रमाणन निकाय मुख्य रूप से यह मूल्यांकन करता है कि आंतरिक नियंत्रण प्रणाली अच्छी तरह से और कुशलता से काम कर रही है या नहीं। आईसीएस दस्तावेज़ीकरण प्रणाली और कर्मचारियों की योग्यता की जाँच करके और कुछ किसानों का फिर से निरीक्षण करके मूल्यांकन किया जाता है। इस तरह की गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली का ब्यौरा आईसीएस मैनुअल के नाम से तैयार मैनुअल में विस्तार से वर्णित है।

आईसीएस मैनुअल तैयार करने के बुनियादी चरण इस प्रकार हैं:

क. योग्य कर्मियों को खोजना और यह सुनिश्चित करना कि वे जैव उत्पादन और आईसीएस विकास में आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

ख. कृषकों का पता लगाना .

ग. अनुकूलित और उपयुक्त आईसीएस रूपों और प्रक्रियाओं को विकसित करना शुरू करें ।. यह बहुत महत्वपूर्ण है कि प्रक्रियाएं वास्तव में लागू होती हैं और सभी कर्मचारियों द्वारा समझी जाती हैं।

घ. प्रमाणित मानक के अनुसार, प्रथम निरीक्षण से पहले सभी न्यूनतम अपेक्षाएं पूरा / कार्यान्वित की जानी है, और इसे आईसीएस मैनुअल में शामिल किया जाना है।

ङ. प्रथम निरीक्षण के पहले या उसके दौरान , जैविक प्रमाणीकरण निकाय को आईसीएस दस्तावेज की जांच और आकलन करना चाहिए और यदि आवश्यक हो तो कुछ टि प्पणियों या शर्तों का सुझाव दिया जा सकता है ।

च. आईसीएस दस्तावेज़ में धीरे-धीरे सुधार करें, जिसमें प्रक्रियाएं, फ़ॉर्म, और आईसीएस स्ट ाफ द्वारा इसका कार्यान्वयन आदि शामिल हैं।

यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आईसीएस की नीतियों और प्रक्रियाओं से किसानों समेत सभी को जागरूक किया जाता है. अतः आंतरिक आईसीएस मैनुअल हमेशा बनाया जाता है, अद्यतित किया जाता है और सभी प्रासंगिक भाग सभी के लिए उपलब्ध कराये जाते हैं। प्रत्येक पंजीकृत जैव किसान का आंतरिक निरीक्षकों द्वारा कम से कम वर्ष में एक बर आंतरिक नियंत्रण द्वारा निरीक्षण किया जाता है। .

प्रत्येक आंतरिक निरीक्षक को एक सक्षम व्यक्ति द्वारा वर्ष में कम से कम एक बार प्रशिक्षण

दिया जाना चाहिए। एक आईसीएस ऑपरेटर का एक आंतरिक मानक होना चाहिए जो कि स्थानीय स्थिति पर लागू होता है और जिसे सभी के द्वारा आसानी से समझा जा सकता है।

समस्याएं और संभावनाएं

भारतीय जैव जलकृषि कार्यक्रम (आईओएपी) के शुरुआती चरण में यह साबित हो सकता है कि देश में जैव जलकृषि को लागू किया जा सकता है। परिणाम भी उत्साहजनक थे। ज्ञात की गयी प्रमुख समस्याएं जैव प्रमाणन के लिए तय किए गए मानदंड बहुत ही सख्त थे, खासकर बीज उत्पादन के लिए मानक। आईओएपी में बीजों का जैव रूप से उत्पादन किया जाना है, जिसकी बहुत सी व्यावहारिक कठिनाई होती है। वियतनाम और बांग्लादेश के लिए निर्धारित मानक बहुत उदार हैं, उसके लिए उन्हें किसी भी हैचरी उत्पादित बीज का उपयोग करने की अनुमति दी जाती है। इसी तरह समय पर जैविक खाद्य की उपलब्धता एक और अडचन है। चारे के लिए कच्चे माल का उत्पादन जैव रूप से तैयार किया जाना है और कच्चे माल की उपलब्धता भी दुर्लभ है। इसके अतिरिक्त अधिकांश छोटे और सीमांत किसान प्रमाणन शुल्क का भुगतान नहीं कर सकते।

संप्रति, दुनिया में बहुत कम देश हैं जो जैव जलकृषि कार्यकलापों में लगे हैं । भारत इस क्षेत्र के कुछ अग्रणियों में से एक है, जिसकी विशाल संभाव्यता है। देश से जैव समुद्री खाद्य का निर्यात प्रारंभिक चरण में है, और इस चरण पर आवश्यक संवर्धनात्मक प्रयास इस सेक्टर को एक चिरस्थायी स्तर तक बढ़ा सकता है और इस प्रकार हम जैव समुद्री खाद्य की अंतरराष्ट्रीय मांग को पूरा कर सकते हैं।

जैव उत्पादन की दीर्घकालिक सफलता मुख्य रूप से उत्पाद की उच्च गुणवत्ता, समय पर चारे की उपलब्धता, विश्वसनीय इनपुट आपूर्तिकर्ता, हैचरी बीज उत्पादन के मानकों पर छूट, कम उत्पादन लागत, प्रतिस्पर्धी मूल्य, जैव कृषि में लगे कृषकों को शिक्षित करने और अधिक से अधिक कृषकों द्वारा जैव उत्पादों का उत्पादन कराने पर निर्भर करती है ।

विश्व में श्रिम्प और मत्स्य संसाधनों के मामले में भारत सबसे अमीर देशों में एक है और यूरोपीय और अमेरिकी बजारों में जैव एक्वा उत्पादों की भारी मांग है। सभी बड़े सुपर बजार, कूप (स्विट्जरलैंड), कूप इटालिया (इटली), आउचन (फ्रांस), एल्डि, फामिला (जर्मनी) बिल्ला (ऑस्ट्रिया) और ब्रिस्टल बे (यूएसए) पूरे विश्व में जैव उत्पाद आपूर्तिकर्ता की खोज कर रहे हैं ।

आभार

लेखक आदरणीय अध्यक्ष, एमपीईडीए, निदेशक, एमपीईडीए, आईओएपी कार्यक्रम के पदाधिकारियों, आईओएपी कार्यक्रम में शामिल कृषकों और परियोजना के भागीदारों को उनके सभी प्रकार के सहयोग और मार्गदर्शन के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। श्री सैमन जॉन, श्री विष्णु भट्ट, श्री रतिनराज और श्री रेजी मैथ्यू के अतिरिक्त इंडोसेर्ट आलुवा, मेसर्स बेबी मराइन, तोप्पुमम्पडी, कोच्चि, मेसर्स वॉटर बेस, आंध्र- प्रदेश के सभी अधिकारियों और इस उद्यम के साथ जुड़े अन्य सभी के प्रति विशेष आभार।

हिन्दी के प्रयोग के लिए वर्ष 2017-18 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
1	हिन्दी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 100% 2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 100% 3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व 'ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 100%	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 90% 2. 'ख' क्षेत्र से ख' क्षेत्र को 90% 3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 100%	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 55% 2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 55% 3. ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 85%
2	हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया जाना	100%	100%	100%
3	हिन्दी में टिप्पण	75%	50%	30%
4	हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5	हिन्दी टंकण करनेवाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6	हिन्दी में डिक्टेशन/ की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
	टंकण,आशुलिपि)			
8	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोडकर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिन्दी ई-पुस्तक,सीडी/डीवीडी, पेन ड्राइव तथा अंग्रेज़ी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय ।	50%	50%	50%
10	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रोनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
11	वेबसाइट	100%(द्विभाषी)	100%(द्विभाषी)	100%(द्विभाषी)
12	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन	100%(द्विभाषी)	100%(द्विभाषी)	100%(द्विभाषी)

13	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों, (उ.स/निदे./सं.स) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों काप्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिन्दी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें	
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15	कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिन्दी अनुवाद		100%	

विदेशों में स्थित भारतीय कार्यालयों के लिए कार्यक्रम

(क)	हिंदी में पत्राचार (भारत/विदेश स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ)	50%
(ख)	फाइलों पर हिंदी में टिप्पण	50%
(ग)	वर्ष के दौरान नराकास की आयोजित बैठकों की संख्या (नराकास का गठन किसी नगर में केंद्र सरकार के 10 कार्यालय या अधिक होने की स्थिति में किया जाए)	वर्ष में कम से कम 2 बैठकें
(घ)	वर्ष के दौरान विराकास (विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति) की आयोजित बैठकों की संख्या (विराकास का गठन कार्यालय-अध्यक्ष की अध्यक्षता में किया जाए)	वर्ष में कम से कम 4 बैठकें
(ड़)	कंप्यूटरों सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी उपलब्धता	100%
(च)	हिन्दी टंकण करनेवाले कर्मचारी /आशुलिपिक	प्रत्येक कार्यालयों में कम से कम एक
(छ)	दुभाषियों की व्यवस्था	प्रत्येक मिशन/दूतावास में स्थानीय भाषा से हिंदी में और हिंदी से स्थानीय भाषा में अनुवाद के लिए दुभाषिए की व्यवस्था कर की ।

लाजवाब और तीखी फिश करी

सामग्री

250	ग्राम मछली
1	टुकड़ा अदरक
6-7	हरी मिर्च
7-8	प्याज
1	चम्मच लाल मिर्च पावडर
	एक चुटकी हल्दी पावडर
3-4	चम्मच धनिया पावडर
4-5	कडी पत्ता
	थोड़ा नमक
1/2	चम्मच अमचूर पावडर
1	कप टमाटर प्यूरी
1/2	लीटर नारियल दूध

विधि:

लाल मिर्च पाउडर, अदरक, हरी मिर्च, प्याज, हल्दी, धनिया पाउडर, कडी पत्ता को मिलाकर मिक्सी में बरीक पीस लें। मछली को अच्छी तरह धो कर उसे पिसे हुए मसालों के साथ मिलाएं। इसे 10-15 मिनट तक रखे रहने दें। अब कड़ाही में तेल डालें व तेल गर्म होने के बद उसमें कड़ी पत्ता और प्याज डालकर गुलाबी होने तक भूनें। इसमें मसाला लगी मछली डालकर तब तक भूनें, जब तक कि मछली अच्छे से पक ना जाए। दूसरी तरफ नारियल के दूध को कड़ाही में डालकर धीमी आंच पर पकाएं। जब यह पककर आधा रह जाए तो उसमें तैयार की हुई मछली को डालकर चलाएँ। जब मछली दूध के अन्दर पूरी तरह पक जाए तो उसमें अमचूर पावडर डालकर उतार लें। तैयार गरमागरम चटपटी फिश करी को चावल के साथ खाएं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोच्ची से समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण को राजभाषा के सर्वाधिक प्रभावी कार्यान्वयन तथा उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रथम राजभाषा शील्ड

प्रथम राजभाषा चलशील्ड प्राप्त करते हुए
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण के
उप निदेशक (राभा) - श्री हिमांशु श्रीवास्तव एवं
हिन्दी अधिकारी - श्रीमती तुलसी नायर तथा अन्य कर्मचारीगण

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय,भारत सरकार)
एमपीईडीए भवन, पनंपिल्ली एवन्यू, डाक पेटी सं 4272,
कोच्ची- 682036, भारत